जो अल्लाह को राज़ी करना चाहते हैं वही कामयाब।

(सूरह रूम, आयत नं. 38)

दीनी चाहत

ईमानी चाहत
इल्मी चाहत
अमली चाहत

अपनी चाहत बदलो

खुदा ने आजतक उस क़ौम की हालत नहीं बदली
न हो चाहत जिसको खुद अपनी हालत बदलने का

चाहत
बदलने से
हालात
बदलेगें

www.ghausokhwajaorazatrust.com

किताब का नामः **अपनी चाहत बदलो**

मुसन्निफ : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँ क़ादरी (राँची, झारखण्ड)

कम्पोजिंग व डिजाईनिंग : सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँ क़ादरी

नज़रे सानी : टीम, गौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

बएहतमाम : ख़िदमते ख़ल्क दरबार, राँची, झारखण्ड (इंडिया)

प्रिटिंग : रांची, झारखंड

तादाद : 1000

कीमत : 50/-

मेरी जिंदगी का मक़सद तेरे दीन की सरफराज़ी!
इसलिए मैं मुसलमान इसलिए मैं नमाज़ी !!

अल्लाह फ़रमाता है :
"ऐ ईमान वालों अगर तुम खुदा के दीन की मदद करोगे अल्लाह तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे क़दम जमा देगा।"
(तर्जमा कंजुल ईमान, सूरह मुहम्मद, आयत नं. 7)

ऐ जज्बा-ए-दिल गर चाहूँ तो हर चीज मयस्सर आ जाए !
मंजिल के लिए पहल करूँ और सामने मंजिल आ जाए !!

नोटः- किताब की कंपोज़िंग में हालाँकि बहुत एहतियात बरती गई है, मगर फिर भी पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि टाइपिंग वग़ैरा में कोई ग़लती नज़र आए तो इत्तेला देकर शुक्रिया का मौक़ा दें।

पेशे लफ्ज

हम्द व सना

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

या अल्लाह, तमाम तारीफे तेरे लिए, तू ही तारीफ के लायक है, तेरी ज़ात बेमिस्ल व यकता है, तू हमेशा से है, हमेशा रहेगा। तू एक है, पाक है, तू ही इबादत के लायक है। तू ही सारी चीजों को बनाने वाला है। तू ही सारे जहां का रब है। या अल्लाह तू मेरा खुदा, मैं तेरा बंदा, तूने मुझे इबादत के लिए बनाया और कुरआन मेरे हिदायत के लिए उतारा, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को राहे हिदायत और तरीका ए सुन्नत के लिए भेजा, औलिया का सिलसिला वसीला के लिए कयामत तक जारी रखा ताकि मैं कुरआन से हिदायत पाऊँ, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सुन्नतों को अपनाउं और तेरे औलिया के वसीले से ईमान वाला बन जाऊँ,

ऐ मेरे रब तेरा एहसाने अज़ीम है की आदम अलैहिस्लाम को अपने कुदरत वाले हाथ से बनाया और उनकी औलाद हमे बनाया और सबसे बड़ा एहसान ये है कि जिस हबीब को तूने अपने नूर की तजल्ली से बनाया उसका उम्मती हमे बनाया यानी अशरफुल मखलुकात बनाया और शुक्र है तेरी दुनियावी और उखरवी नेयमतों का जिसे मैं शुमार भी नहीं कर सकता। या अल्लाह तुझ से अज़ीम, रहीम, करीम, मतीन, अलीम, हलीम, हकीम व बातिन कोई नही ।

दरूद व सलाम हो उस नबीये करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर जिसे तूने अपनी नूर की तजल्ली से बनाया और सारे जहां के लिए रहमत बनाकर हम गुनहगार उम्मतियों का नबी बनाया व सलामती हो असहाब पर और नबी के आल पर जिनका सिलसिला तूने कयामत तक जारी रखा, और सलामती हो उन तमाम मोमिन मोमिनात पर जिन्होंने तुझे राज़ी किया।

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

औलिया अल्लाह दिल को बनाते है 12

अर्ज़े मुसन्निफ

मौजूदा दौर में मुसलमान नफ़्सानी, शैतानी और दुनियावी चाहत कीवजह से तेज़ी के साथ गुनाहों की दलदल में धंसते चलें जा रहे है और गुनाहों की अंजाम से मुसलमान परेशान है। आज गुनाहों को गुनाह नहीं समझा जा रहा है और जब तक अपने गुनाहों का एहसास ना हो तब तक कोई भी तौबा करने का चाहत कर नहीं सकता और बग़ैर चाहत व तलब के अल्लाह का तौफिक़ मिल नहीं सकता। याद रख हालात अपने आप नहीं बदलते हैं हालात बदलने के लिए चाहत का बदलना शर्त है। जब तक तौबा ना करे तब तक कोई इल्म व अमल और ईमान में मज़बूती आ नहीं सकता। अल्लाह को राज़ी करने के लिए इन्ही तीन (मज़बूत ईमान, इल्में दीन, नेक अमल) का दरकार है वरना मुसलमानों पर रहम, जानो माल की हिफ़ाज़त और दुआ की कबुलियत का दरवाजा बन्द कर दिया जाता है जो सही रिवायत और हिकायत से साबित है।

अल्लाह की तौफिक़ से फ़कीर के दिल में क़ौम का दर्द और उम्मते मुस्तफा की हक़ीक़ी व कामिल इस्लाह व फ़लाह के लिए इल्हामी इल्म का दुखूल जारी रहता है जिसके बदौलतअपनी काबिलियत के मुताबिक दीन का ख़िदमत अंजाम देता रहता हूँ।

अल्लाह के फ़ज़्ल व करम से हमारी तंज़ीम ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट के बानी (फ़कीर मुसन्निफ़) और मुत'अल्लिक़ा टीम की मेहनत से ज़ेरे नज़र किताब ''**अपनी चाहत बदलो**'' जो तसव्वुफ़ पर मुश्तमिल है इसे लिखने का असल मक़सद ये है कि मुसलमान अपने आप को आख़िरत का तालिब बनाये दुनिया हुसूली की चाहत दिल से निकाल दे क्योंकि ये दुनिया काफ़िरो के लिए ज़न्नत है और मोमिन के लिए क़ैदखाना (यानी शरीअत का दायरा है इसी के अन्दर रहने का हुक़्म है)।

हमनें महसूस किया की मुसलमानों के जाहीरी और बातिनी इस्लाह के लिए कुछ ऐसे इल्म को जमा किया जाए जिससे उनके दिल में बदलाव पैदा हो लिहाजा इस किताब को मुक़म्मल पढ़े तो बात समझ आएगी।

आख़िर में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ करता हूँ कि अपने हबीब मुहम्मद मुस्तफा ﷺ के सदक़े तुफ़ैल और औलिया ए किराम व औलमाए इज़ाम के वसीले से हम सब को तौबा व तक़वा की तौफिक़ अता फ़रमाए क्योंकि तौबा व तक़वा के बग़ैर हक़ की राह पर चलना नामुमकिन है।

ख़ादिम

सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी

बानी ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

व ख़ादिम ख़ानक़ाहे चिश्ती क़ादरी

बाढ़ु, रांची, झारखण्ड (इंडिया)

हि. 25 रजब 1446 / ई 26 जनवरी 2025

9534124663

अहले सुन्नत की पहचान मस्लके आला हज़रत है

(Maslake Aala Hazrat is Latest Version of Ahle Sunnat Wa Jamat)

आज के दौर में मस्लके अहले सुन्नत की वाजेह शिनाख्त और पहचान ''**मस्लके आला हज़रत**'' है, जिसका इस्तेमाल गुस्ताख़ाने रसूल व फिरकहाए बातिला से इम्तियाज़ के लिऐ होता है। 14वीं सदी हिजरी में जब फिरकहाए बातिला के पैरोकारों ने कुरआन व हदीस की गलत तर्जुमानी की, रसूले अकरम ﷺ की शाने अकदस में खुली गुस्ताखियां की, ज़रूरयाते दीन से इंकार किया तो सैय्यदना आला हज़रत ईमाम अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीन व मिल्लत फाजिले बरेलवी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु ने जिहाद बिल कलम फ़रमा कर उन दुश्मनाने रसूल की सरकूबी फ़रमाई और अहले सुन्नत व मस्लके आला हज़रत की हिफाजत का बे मिसाल कारनामा अंजाम दिया। यहां तक कि आप का नाम सुन्नी और देवबंदी यूंही और फिरकहाए बातिला के बीच वजहें इम्तियाज़ (फर्क) बन गया। यही वजह है की मौजूदा दौर के ज़माने में मस्लक की निस्बत आला हज़रत की तरफ की जाती है और मस्लके आला हज़रत बोला और लिखा जाता है और कभी एक ही चीज़ के चन्द नाम होते हैं। मस्लन खुद अहले सुन्नत के मुतअद्दिद नाम हैं (मस्लके आला हज़रत) और ''मस्लके सवादे आज़म'' है तो इस तरह आज के ज़माने में मस्लके अहले सुन्नत व जमात से इसारा होता है, जैसे मूसा अलैहिस्सलाम का लफ्ज़ हकपरस्त से, फिरऔन का लफ्ज़ बातिलपरस्त से, इसारा होता है। यही वजह है कि आज यह लफ्ज़ आला हज़रत अहले सुन्नत की पहचान बन चुका है। अगर कोई शख़्स अकीदत से आला हज़रत बोलता है तो सुनने वाले बिला तअम्मुल उसे सुन्नी बरेलवी यकीन कर लेते हैं और लोग समझ जाते हैं कि यह अहले सुन्नत से है और यह उर्फे शरअन महबूब व मकबूल है और हदीस शरीफ में है, जिस काम को मुसलमान अच्छा जानें, वो अल्लाह के नज़दीक भी अच्छा है।

'' अल-हासिल आला हज़रत की जात उन बेशबहा दीनी खिदमात खुसूसन अहकाके हक़ और इबताले बातिल के बाइस सुन्नियत की शिनाख़्त है। इसी लिए उसके हम मस्लक होने का मानी है, सुन्नी होना और मस्लके आला हज़रत का मानी है, मस्लके अहले सुन्नत व जमात लेहाजा हमारे दयार और हिन्द व पाक के अकसर शहरों और इलाकों में मस्लके अहले सुन्नत की पहचान मस्लके आला हज़रत है। ना कि मस्लके आला हज़रत कोई नया या मस्लके अइम्मए अरबआ से अलग कोई पाँचवां मस्लक है।

अज़ : मौलाना मुहम्मद तहसीन रजा कादरी, गंगाघाट, यू.पी.

किताब लिखने की वजह

कुर्बे क़ियामत फ़ितनों के इस दौर में मुसलमान कौ़म के गा़फिल उल्मा और जा़हिल अवाम मालो दौलत और शोहरत की चाहत में मशगूल होकर अल्लाह को भूल बैठे और दीनदारी के मामले में लापरवाह है जैसा कि कुरआन में अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : तुम्हें गा़फ़िल रखा माल की ज़ियादा तलबी (चाहत / महब्बत) ने। (सूरह तकासुर, आयत न. 1)

दुनियावी मालो दौलत या इज्ज़त, साज व सामान और फा़नी जान की महब्बत में आज मुसलमान वहीं काम को करने में मशगुल व मज़बूर है जिसे करना शरीअ़त में जुर्म व जुल्म कहा गया है यानी इस दौर में मुसलमान मुजरिम और जा़लिम बने हुए है।

अल्लाह ﷻ को भूल कर मखलूकों (हुकूमत, मंत्री, थाना, मिडिया) से मदद, उम्मीद, रजा़, भरोसा करना, उख़्रवी ज़िन्दगी को भूल कर दुनियावी ज़िन्दगी को पसन्द करना, उख़्रवी नेयमतों को भूलकर दुनियावी दौलत को सब कुछ समझना, कब्र को भूल कर मकान से मुहब्बत करना, ईमान को भूल कर जान से मुहब्बत करना, रूह को भूलकर फा़नी ज़िस्म से मुहब्बत करना, दीनी इल्म को छोड़कर दुनियावी इल्म का तलब करना, नफ्सानी ख़्वाहिशात को पूरा करना, शैतानी खसलतों को अपनाना, दुनिया से मुहब्बत करना, कुफ्फार के तौर तरिका को अपनाना, मुनाफिक़ व बदमजहबों से मेल जोल व रिस्तेदारी रखना, फासिक़ फाजिर की सोहबत इख़्तियार करना ये तमाम उमूर बातिल या बातिल में मिलावट होने के वजह से जुर्म व जुल्म है।

आज मुसलमानों के अंदर इतनी खाराबियां होने के बावजूद मुसलमानों को एहसास तक नहीं की अपनी गलतीयां व जुर्म से कैसे बचे।

इस किताब के जरिए मुजरिम व जा़लिम मुसलमानों की भलाई के लिए उसे अपना जुर्म क़बूल करा कर तौबा की चाहत दिल में पैदा कराना है।

तौबा अल्लाह ﷻ को राज़ी करके सीराते मुस्तकीम पर चलने के लिए पहला शर्त है। अल्लाह ﷻ का रज़ा सबसे बड़ी है बगै़र अल्लाह ﷻ को राज़ी किए मज़बूत ईमान का होना मुमकिन नहीं और बगै़र कामिल ईमान के इल्मो हिदायत व अमल की तौफिक मुमकिन नहीं। कुरआन में अल्लाह ﷻ फ़रमाता है (तर्जुमा) : "बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब उन्हें राह (इल्मो हिदायत) देगा"। (कंजुल ईमान, सूरह युनुस, आयत नं. 9)

ख़ादिमे ख़ल्क **सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ाँ क़ादरी**
बानी ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट

आज का मुआशरा

आह! इस्लाम तेरे चाहने वाले ना रहे ।
जिन का तू चाँद था अफसोस वो हाले ना रहे ॥

आज हमारी मस्जिदें वीरान, खानकाहें उदास, दर्सगाहें बेनूर होती जा रही है, मर्दो में गफ़लती, औरतो में बेपदर्गी और बच्चों का ज़हन, कुफ्फार के तौर तरिको, मुल्की बादशाहों, दुनियादार नेताओ, फिल्मी अदाकारों के नकसे कदम पर है लेकिन मिल्लते इस्लाम के एक भी अफराद औलिया अल्लाह के हयात से अच्छी तरह वाकिफ नहीं, अब ईमान से बताया जाए कि चारों तरफ हमारी दीवारें कमज़ोर हुई या नहीं और इतनी कमज़ोर हुई कि आने वाले तूफान का मुकाबला करना नामुम्किन है।

मौजूदा दौर के मुसलमान

बदतरीन कौम :- बेशक आज हम नाम के मुसलमान है नाम तो हमारा मुसलमान है मगर 95% काम हमारे शैतानी और नफ़सानी है, जो हमारा दिल खुद गवाही देगा कि आज हम नाम के मुसलमान है या नहीं। क्योंकि

हकीकत छुप नहीं सकती बनावट के उसूलों से!
खुशबू आ नहीं सकती कभी कागज़ के फूलों से!!

गौ़र करो कि आज हम अल्लाह के हुकूक और बंदो के हुकूक़ अदा न करके गुनाहों के समंदर में डूबे हुए है या नहीं, झूटों के दामन में पल रहे है या नहीं, दुश्मनी की आग में जल रहे है या नहीं, ग़फलत के शबिस्तां पर सो रहे है या नहीं, गुमराह रास्तों पर चल रहे है या नहीं, नफरत की मौजों में उलझ रहे है या नहीं, तंगनज़री की अंधेरियों में सफर कर रहे है या नहीं, सुदखोरी के माहौल में जी रहे हैं या नहीं, मगरूरियत की फ़िज़ा में परवाज़ कर रहे है या नहीं, शराब नोशी व शराब फरोशी की दुनिया में जिंदगी गुज़ार रहे है या नहीं, कितनी हकीकतें गिनवाउं, गिनवाउं तो क्या गिनवाउं, बुराइयां गिनवाउं तो कितनी गिनवाउं, बुराई एक हो तो इसका जिक्र करूं, एक जंजीर हो तो इसकी कड़ियां गिनवाउं, आज तो हर जलील काम का सरदार मुसलमान है, हर पस्त हरकत आज हमारा शेवा बन चुकी है, क्या नहीं है हम में? बेहयाई व बेईमानी, क्या नहीं है हम में, बेदीनी व सूदखोरी क्या नहीं है हम में, तंग नज़री व फरेबकारी, क्या नही है हम में, शराब नोशी, क्या नहीं है हम में? सट्टा पट्टा व मटका बाज़ारी इसीलिए तो लार्ड बर्नाड शाह ने अपनी किताब इस्लाम और मुस्लिम में लिखा है, "दुनिया का सब से अच्छा मज़हब इस्लाम है और दुनिया की सब से बदतर कौम मुसलमान है" इसीलिए डॉ. इक्बाल कहते है

यूं तो सय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफगान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ मुसलमान भी हो !

आज हम हक़ीक़ी मुसलमान नहीं रहे

महब्बते रसूल दिल में जमाए रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना

बातिल की मिलावट हमारे जाहिर और बातिन में ग़र्क कर चुकी है इस वजह से हम मुनाफिक़ो में शुमार है चाहे मुनाफिके अमली हो या मुनाफिके एतेक़ादी। मुनाफ़िक़ का माना है हक़ व बातिल में मिलावट करने वाला। ईमान में बातिल कि मिलावट कुफ्र है और अमल में बातिल का मिलावट फिस्को फूजुर है। बातिल यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात, शैतानी खसलते, दुनिया की मुहब्बत, कुफ़्फ़ार से मुशाबिहत, मुनाफिक़ो की सोहबत हमे हक़ीक़ी मुसलमान के लायक नहीं रहने दिया। जैसा की हदीस यानी फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है (तर्जुमा) मेरी उम्मत के अक्सर मुनाफिक़ कारी हैं (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 77)

आज हमें उस काबिले रश्क दौर की तरफ पलट जाना चाहिए जिस दौर में हमारे असलाफ सही माइनों में (हक़ीक़ी) मुसलमान थे और चराग की तरह इस्लाम की तजल्ली का नूर फैलाए हुए थे, कभी वो कुंदती हुई बिजली की तरह कुफ्र का खर्मन जला देते थे। उनकी आवाज़ गूंजती थी तो पहाड़ों के कलेजे दहल जाते थे और दरयाओं का सीना फटने लगता था। यह सही है कि अब वो ज़माना पलट कर नहीं आ सकता लेकिन अगर हम खुद उस ज़माना की तरफ पलटना चाहें तो हमें कौन रोक सकता है। पहले के मोमिन लोग वो थे कि जिनकी दहशत से लश्करे कुफ्फार में हलचल मच जाती थी।

सज्दा खालिक को भी, इब्लीस से याराना भी...
हश्र में किस से अक़ीदत का सिला माँगेगा...?

अपने असलाफ़ का नाम लेवा तो है मगर निस्बत व मुहब्बत से सीना खाली है इस्लामी उमंगों से दिल वीरान है और गैरते ईमानी से रंगों की आंत सर्द पड़ गई है न वो लज़्ज़ते बंदगी है न दौलते इश्क की फिक्र है न जहन्नम की हौलनाक अज़ीयतों की फिक्र है न जन्नत की सर्मदी राहतों का शौक, बस दुनिया तलबी की साजिश में पूरी जिंदगी गलीज़ व पलीद हो कर रह गई है। कहने को तो हम मुसलमान है लेकिन दिल व जिगर की सतह दीनी जज्बे से खाली है।

सिराते मुस्तक़ीम पर चलने की चाहत

नमाज़ में नमाज़ी सूरह फातेहा में जबान से बोलता है

اهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ
صِرَٰطَ ٱلَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ ٱلْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا ٱلضَّآلِّينَ

तर्जमा : ''हमको सीधा रास्ता चला, रास्ता उनका जिन पर तूने एहसान किया, न उन का जिन पर ग़ज़ब हुआ और न बहके हुओं का''(सूरह फातेहा, आयत नं. 6 ,7)

मगर अफसोस यह सिर्फ जबानी बोली है चाहत नहीं । चाहत तो नफ्सानी ख़्वाहिशात की है , चाहत तो शैतान के रास्ते पर चलने का है , चाहत तो दुनियादारी की ही जैसे कि मजा, मस्ती, दुकान, मकान, जिस्म व जान हसद, तकब्बुर, क़त्ल, दुनयादारी, कुफ्फार का तौर तरीका, मुनाफिको से मेल जोल यानी सुन्नत व शरीअत के खिलाफ़ जिन्दगी गुजारना। ये तमाम हरकतें दीन से दूरी का सबब है ऐसी चाहत हलाक़त है।

अपनी चाहत बदलो

ऐ नादान तुम्हारी चाहत ही तुम्हे अच्छा या बुरा बनाकर बुरे अंजाम व अच्छे इनआम का हक़दार बनाता है। जान लो की हक़ व बातिल दो रास्तें है और तुम्हारा ज़िस्म सवारी (गाड़ी) है और तुम्हारा आमाल सवार (पैसेंजर) है और तुम्हारी चाहत हेंडल (स्टेरिंग) है तू जिधर जाना चाहता है उधर तुम्हारा जिस्मानी अंग व अमल चला जाता है यानी अच्छे या बुरा काम। अगर तू बुरी चाहत रखता है तो पहले बुरा बनता है फिर बुराई करता है फिर बुरे अंजाम का हक़दार होता है।अगर अच्छी चाहत रखे तो अच्छा बनेगा, और अच्छा काम करेगा फिर अच्छा ईनआम (अल्लाह की रहमत) का हक़दार होगा।

तुम में हूरों का कोई चाहने वाला ही नहीं
जल्वा-ए-तूर तो मौजूद हैं मूसा ही नही

चाहत बदलने से हालत बदलेगें

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा):

"बेशक अल्लाह किसी क़ौम से अपनी नेअमत (मामलात) नहीं बदलता जब तक वह खुद अपनी हालत न बदल दें और जब अल्लाह किसी क़ौम को अज़ाब देना चाहे तो वह फिर नहीं सकती और उसके (अल्लाह) के सिवा उसका कोई हिमायती (मददगार) नहीं।" (सूरह र'अद, आयत नं 11)

ख़ुदा ने आजतक उस कौम की हालत नहीं बदली!
न हो चाहत जिसको खुद अपनी हालत बदलने का!!

आज भी तुम्हारे दिल में वही जज़्बा, जोश व खरोश पैदा हो सकता है जो पहले के मुसलमानों में था । वही शुजाअत आ सकती है जो दौरे माज़ी में थी, मगर शर्त सिर्फ यही है कि अल्लाह की रस्सी को मज़बूत पकड़ लो उसकी अज़ीमुश्शान बारगाह में झुक जाओ, अपने दिल को खौफे खुदा से धो लो, ईमान की रौशनी से अपने ज़मीर को मुनव्वर कर लो, फिर देखो करिशम-ए-कुदरत तुम्हारे जेरे कदम सारी कायनात आती है या नहीं! और हां शैतान की इताअत को ठुकरा दो अल्लाह की इताअत के सामने सजदा रेज़ हो जाओ, अपनी बदआमालियों से तौबा कर लो मस्जिदों की ज़ीनत बन

जाओ जाहिद और मुजाहिद बन जाओ, शहीद और ग़ाज़ी बन जाओ, तुम तो अल्लाह व रसूलल्लाह के गुलाम हो अल्लाह के बंदे हो तो फिर शैतान के गुलाम क्यों बने हो और अल्लाह ही ने तुम्हें उस कायनात का बादशाह बना कर भेजा है इसके शुक्रिया में नमाज़ी बन जाओ यह हिप्पी विप्पी बनना छोड़ दो तुम इस कायनात के रुखसार पर मर्द बन कर आए हो औरत बन कर नहीं, तुम तो इस्लाम के मुजाहिद हो अल्लाह के सिपाही हो अब भी वक्त है कि अपनी गलती पर नादिम हो जाओ और ज़ार व कतार रो-रो कर नदामत के आंसू बहाओ क्योंकि नदामत के आंसू अल्लाह के कहर व ग़ज़ब को बुझा देती हैं।

चाहत ही तक़दीर है

जान लो इंसानों को चाहने और चुनने का इख़्तियार है तक़दीर इंसान की चाहत के मुताबिक लिखी गई है। अगर कोई दुनिया चाहा तो अपने चाहत की वजह से वो दुनियादार बना और अगर किसी ने आख़िरत चाहा तो अपने चाहत की वजह से दीनदार बना।

किताब अनवारे शरीअत में है हम जैसा करने वाले थे अल्लाह त'आला ने अपने इल्म से वैसा लिख दिया अगर किसी की तकदीर में बुराई लिखी तो इस लिए कि वह बुराई करने की चाहत रखता था अगर वह भलाई करने की चाहत रखता तो खुदाये त'आला उसकी तकदीर में भलाई लिखता खुलासह यह कि खुदायेतआला के लिख देने से वन्दा किसी काम के करने पर मजबूर नहीं किया गया। तक़दीर हक़ है उसका इन्कार करने वाला गुमराह बदमज़हब है। (अनवारे शरीअत, पेज 16)

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : "जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह की चाहत व अमल)।'' (सूरह शूरा, आयत न. 30)

परेशानी का वजह तुम्हारा तकदीर नही है तुम हो
तुम्हारे चाहत के मुताबिक तकदीर लिखी गयी है।

मुहब्बत ही चाहत है

जिससे मुहब्बत हो जाये उसी को पाने की चाहत इंसान के दिल में होता है और उसे पाने के लिए अपना कीमती वक़्त, इताअत, कुव्वत, दौलत, सेहत, जिस्म व जान व जबान लगा देता है जैसे बातिल (नफ्स, शैतान, दुनिया) से मोहब्बत यानी बातिल को पाने की चाहत और हक़ (अल्लाह, रसूलुल्लाह, औलिया अल्लाह) से मोहब्बत यानी हक को पाने की चाहत है लेकिन दिल में कोई एक ही समा सकता है या तो हक़ या बातिल।

एक हदीस में हज़रते अबू मूसा रदियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि पैग़म्बरे खुदा सलल्लाहो अलैहे व सल्लम का इर्शाद पाक है कि- "जिस शख्स ने अपनी (इस) दुनियाँ से मुहब्बत किया तो उसने अपनी आख़िरत को नुकसान में डाला और जिसने अपनी आख़िरत से मुहब्बत किया उसने अपनी दुनियाँ को नुक़सान पहुँचाया।" (अहमद, बैहिक़ी)

यानी जो दुनियादार होगा वो दीनदार नहीं होगा और जो दीनदार होगा वो दुनियादार नहीं हो सकता आप अपना जायजा ले।

दौलत चाहने वालों का अंजाम

अल्लाह फ़रमाता है: तुम्हें ग़ाफ़िल (दीनी मामले में लापरवाह) रखा माल की ज़ियादा तलबी (चाहत) ने , यहाँ तक कि तुमने क़ब्रों का मुंह देखा (यानी तौबा किये बग़ैर मर गया) हाँ हाँ जल्द जान जाओगे (आख़िरत में), फिर हाँ हाँ जल्द जान जाओगे, हाँ हाँ अगर यक़ीन का जानना चाहते तो (अगर हक़ीक़त जानने की कोशिश करते) तो माल की मोहब्बत / चाहत न रखते (सुरह : तकासुर , आयत न 1-5)

ऐ दुनियादार मुसलमान आज तू माल व दौलत की चाहत रखता है इसलिए अल्लाह पर भरोसा नहीं करता, अल्लाह को याद नहीं करता, अल्लाह का भेजा हुआ कुरआन नहीं पढ़ता, अल्लाह के भेजे हुए नबी से मुहब्बत नहीं करता न ही उनका सुन्नत अदा करता है बल्कि अल्लाह व रसूल के हुक्म की नाफ़रमानी करता है। यही तुम्हारी सबसे बड़ा गलती व जुर्म है।इसी का बदला है कि ज़ालिम बादशाह मूल्क में अल्लाह ने मुसल्लत कर दिया है। अपना जुर्म क़बूल कर और तौबा करके अल्लाह त' आला को राजी कर ले वरना आज दुनिया में परेशान है और कल अख़िरत में क़ब्र के अजाब व जहन्नम के अज़ाब से परेशान रहेगा और इस परेशानी की वजह तू खुद होगा।

माल और इज्जत की मुहब्बत मुनाफ़िक़त है

तहकीक इंसान सरकशी करता है इस लिए कि वह खुद को गनी और बेपरवाह समझता है। मजीद फ़रमाया तुम्हें कसरते माल की तलब ने हलाक कर दिया फरमाने नबवी है कि जैसे पानी सब्जियां उगाता है उसी तरह माल और इज्जत की मुहब्बत इंसान के दिल में निफाक (बातिल से महब्बत) पैदा करते हैं। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 38 , पेज 248)

माल की मुहब्बत/चाहत दुनियादारी है

हज़रते अताअ बिन जियाद कहते हैं मेरे सामने दुनिया तमाम जीनतों से सज कर आई तो मैं ने कहा मैं तेरी बुराई से अल्लाह की पनाह चाहता हूं। दुनिया ने कहा अगर तुम मेरे शर (ख़तरात) से बचना चाहते हो तो रुपये पैसे से दुश्मनी रखो क्यों कि दौलत और रुपये पैसे हासिल करना दुनिया को हासिल करना है जो उन से अलग थलग रहे वह दुनिया से बच जाता है। (मुकाशफतुल कुलूब , बाब 38 , पेज 251)

दुनिया चाहने वालों का अंजाम

फ़रमाने नबवी ﷺ है जिस की सब से बड़ी चाहत दुनिया (यानी दौलत, शोहरत, शहवत) हासिल करना है , अल्लाह त' आला के यहां उसका कोई हिस्सा नहीं है , अल्लाह

त' आला ऐसे के दिल पर चार चीज़ों को मुसल्लत कर देता है। दाइमी (हमेशा) गम, दाइमी मशगूलियत, दाइमी रिज़्क में बे बरकती और कभी न पूरी होने वाली आरज़ूएं।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 31, पेज 189)

आख़िरत की चाहत रखो

शेरे खुदा हज़रत अली रदीअल्लाहु अन्हु फ़रमाते है : अगर अल्लाह त' आला और आख़िरत के साथ तेरा यकीन ठीक होता तो आख़िरत की बाकी रहने वाली नेमतों के साथ दुनिया की फ़ानी चीज़ कभी इख़्तियार नहीं करता (यानी दुनियादार नहीं बनता) और आला दर्जे की चीज़ों (यानी उख़्रवी नेएमतों) को कम दरजा (यानी दुनियावी दौलत) और बिल्कुल फ़ानी और लानती चीज़ों के साथ कभी फ़रोख़्त नहीं करता। जब तू दुनिया से मुंह फेर ले और आख़िरत का चाहने वाला हो जाए तो समझ के तेरा तीर निशाने पर लग जाएगा तेरे लिए कामयाबी के दरवाज़े खुल गए और हर तरह की ख़ैर व भलाई के साथ तू क़ामयाब हो गया। जो शख़्स आख़िरत का यकीन रखता है वो दुनिया की लालच नहीं करता। जो शख़्स आख़िरत पर यकीन रखता है। वो दुनिया से मुंह मोड़ लेता है। (अक़वाले हज़रत अली, पेज 50)

दुनियावी नेयमत फ़ानी है

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) "लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की (नफ़्सानी) महब्बत, औरतें और बेटे और तले उपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती, यह जीती दुनिया की पूंजी है और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना (यानी अल्लाह की रहमत व जन्नत) है "(सुरह इमरान, आयत न. 14)

फ़ानी दुनिया की मिसाल

अल्लाह का फ़रमान है : जान लो कि दुनिया की ज़िन्दगी तो (कुछ भी) नहीं मगर खेल कूद (मौज मस्ती, मनोरंजन) और आराइश और तुम्हारा आपस में बड़ा मारना (यानी किसी भी मामले में तकब्बुर करना) और माल और औलाद में एक दूसरे पर ज़ियादती चाहना (कम्पटीशन करना) (ये सब) उस मेंह की तरह है जिसका उगाया सब्ज़ा किसानों को भाया फिर सूखा कि तू उसे ज़र्द देखे फिर रौंदन हो गया (यानी फ़ानी दुनिया की मिसाल फसल की हरियाली खेती की तरह है जो किसानों के लिए ख़ुशी का सबब है लेकिन कुछ ही दिन के लिए) और आख़िरत में सख़्त अज़ाब है और अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और उसकी रज़ा और दुनियावी ज़िन्दगी तो नहीं मगर धोखे का माल। (सूरह हदीद, आयत नं. 20)

अल्लाह की रज़ा चाहो

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : जो अल्लाह को राज़ी करना चाहते हैं उन्हीं का काम बना (यानी वही कायमयाब हुआ)। (सूरह रूम, आयत न 38)

अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है

कुरआन में है : (तर्जमा कंज़ूल ईमान) " अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है, यही (अल्लाह को राजी करना) है बड़ी कामयाबी हासिल करना। (सुरह तौबा, आयत न. 72)

जान लो दिल से कोई भी नियत, ज़िस्म से कोई भी फेल (काम) करने और ज़बान से कोई भी कॉल (बात) बोलने से पहले अल्लाह की रजा़ की चाहत होना चाहिए, मनमर्जी यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के लिए नहीं , शैतान की इताअत के लिए नहीं, दुनिया हुसूली के लिए नही और न ही दौलत की लालच व नामो नमूद के लिए। अल्लाह की रज़ा सबसे बड़ी है तो बड़ी चीज की चाहत होनी चाहिए फानी व कलील दुनिया, मालो दौलत की चाहत न हो। दुनिया में माल व दौलत सिर्फ ज़िस्मानी जरूरत के लिए और इसकी दिली (क़ल्बी) चाहत व मोहब्बत सरासर हलाक़त है।

नबी ﷺ से महब्बत की चाहत

महब्बते रसूल की अहमियत आगे इसी किताब में पढ़कर उस इल्म पर अमल करने की चाहत पैदा करे यानी नबी से सबसे ज्यादा महब्बत की चाहत और इसकी अलामत नबी की सुन्नत को अपनाना है, उनकी इताअत (फरमाबरदारी) करना है उन्ही के लिए जिस्म व जान को कुर्बान करना है।

पीरो मुर्शिद हुजूर ताजुश्शरीआ ने खूब कहा है

ना समझ मरते हैं जिन्दगी के लिए
जीना मरना है सब कुछ नबी के लिए

रसूल ﷺ से महब्बत का शरअई हुक्म

इस्लाम में दाख़िल होने के बाद हर मोमिन पर सबसे ज्यादा हक़ हुज़ूरे अक़दस से मुहब्बत करना है क्योंकि मुहब्बते रसूल ही ईमान है बाकी ईमानी खसलते आज़ा के मानिंद है जबकि कोई भी ज़ाहिरी अमल ईमान का हिस्सा नहीं। अल्लाह ने अपने बंदों को नबी ﷺ से सबसे ज्यादा मुहब्बत करने का हुक्म इसीलिए दिया है क्योंकि नबी ﷺ ही अल्लाह का दीन है हमारे आका ही हक़ का पहचान बताने वाले और हक़ को हम तक पहुंचाने वाले है जब इन से महब्बत हो जाये तो हक व दीन से खूद ब खूद महब्बत हो जाएगा और नेक अमल तो ईमान के बाद करने का हुक्म हुआ है।

चुनांचे इरशादे रब्बानी है: (तर्जमा): ''अगर तुम्हारे बाप तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी औरतें और तुम्हारा कुंबा, तुम्हारी कमाई के माल और वह सौदा जिस के नुकसान का तुम्हें डर है और तुम्हारे पसंद का मकान अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में लड़ने से ज़्यादा प्यारी हों तो रास्ता देखो यहाँ तक कि अल्लाह अपना हुक्म

लाए और अल्लाह फासिकों को राह नही देता।" (सूरह तौबा, आयत: 24)

इस आयते करीमा से वाज़ेह है कि एक मोमिन पर यह फ़र्ज़े ऐन है कि वह माँ बाप, भाई बहन, आल व औलाद, खानदान रिश्तेदार, माल व दौलत, दुकान व मकान ग़र्ज़ कि सारी चीज़ों से ज़्यादा आप से मुहब्वत करे यानी किसी दूसरी चीज़ की मुहब्बत अल्लाह व रसूल ﷺ की मुहब्बत पर ग़ालिब न आने पाए, गोया मुहब्बते रसूल ही मक़सदे ज़िन्दगी है यह न हो तो ज़िन्दगी का लम्हा लम्हा बेकैफ, सारे मशागिल बेसूद और ताआत व इबादात मरदूद, इसी लिए खुद नबीए करीम ﷺ ने भी अपने मानने वालों को अपनी मुहब्बत की तरगीब दी है।

चुनांचे इरशाद है: तर्जमा: "तुम में से कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उस के वालिदैन और औलाद और तमाम लोगों से ज़्यादा उसके नज़दीक महबूब न हो जाऊँ।" (बुख़ारी, जिल्द अव्वल, सफा: 7)

यानी ईमान की मज़बूती और अकमल के लिए तमाम चीजों और तमाम मख़लूक़ से ज्यादा अल्लाह के रसूल यानी हमारे नबी से मुहब्बत करने का हुक्म है यही ईमान है।

फ़रमाने आला हज़रत

आ'ला हज़रत अपनी किताब तमहीदे ईमान में लिखते हैं: यह हदीस सहीह बुख़ारी व सहीह मुस्लिम में अनस इब्ले मालिक अनसारी रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है इसमें तो यह बात साफ फ़रमा दी कि जो हुजूरे अकदस ﷺ से ज़्यादा किसी को अजीज़ (महबूब) रखे हरगिज़ मुसलमान नहीं। मुसलमानों कहो मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ को तमाम जहान से ज़्यादा महबूब रखना मदारे ईमान व मदारे नजात हुआ या नहीं? कहो हुआ और ज़रूर हुआ। यानी उन्ही की महब्बत ईमान है और उसी से नजात हासिल होगी। (तम्हीदे ईमान, पेज 6)

खुदा की रज़ा चाहते हैं दो आलम
खुदा चाहता है रज़ाए मुहम्मद ﷺ

हुज़ूर ﷺ की महब्बत ही निजात है

एक देहाती सहाबी, हज़रते जुल खवेसरा यमानी रदीअल्लाहु त'आला अन्हु, आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम की बारगाहे करम में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैका व आलिका वसल्लम कियामत कब आएगी ? तो आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैका व आलिही वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम ने कियामत के लिये क्या तैय्यारी की है? तो सहाबी ए रसूल ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु त'आला अलैका वसल्लम! मेरे पास इसके सिवा और कुछ तैय्यारी नहीं है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु

त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम से महब्बत करता हूँ। आका करीम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम ने अपने सहाबी से यह सुन कर फ़रमाया : कियामत के दिन उसी के साथ रहोगे जिस के साथ महब्बत रखते हो।(अनवारुल बयान, पेज 309)

हश्र महबूब के साथ होगा

हज़रते इमाम बुखारी रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने यह रिवायत भी नकल की है कि हज़रत अनस रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने यह बशारत सुन कर फ़रमाया : तर्जुमा : मैं आका करीम मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु त'आला अलैहि व आलिही वसल्लम और अबू बक्र व उमर (रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा) से महब्बत रखता हूँ लिहाज़ा मैं यह उम्मीद रखता हूँ कि कियामत के दिन में उन लोगों के साथ ही मैं रहूँगा, अगरचे मेरा अमल कभी भी उन हज़रात के आ'माल के बराबर नहीं हो सकता। (बुखारी शरीफ, जि. स. 52)

न ताअत पर न तकवा पर न ज़ुहद व इत्तिका पर है
हमारा नाज़ जो कुछ है मुहम्मद मुस्तफा पर है

मुहब्बत के 2 अकसाम

1. (पहला) हक़ से मुहब्बत और दूसरा बातिल से मुहब्बत

हक़ से मुहब्बत : अल्लाह की रज़ा के लिए हक़ीक़ी अल्लाह से , अल्लाह के रसूलों से, तमाम अम्बिया व औलिया व मोमिनीन व दीनदारो से मुहब्बत करना। ये मुहब्बत आख़िरत तलबी यानी अल्लाह की रज़ा के लिए खास तौर पर होनी चाहिए अगर्चे दुनियावी जरूरियात भी शामिल हो।

2. बातिल से मुहब्बत : यानी नफ़्सानी मजे के लिए दुनिया, शोहरत, दौलत, ग़ैर महरम औरत का हुसुल के लिए शरीयत के दायरे से हटकर किसी से मुहब्बत करना ये नाजायज़ फेल (काम) है। ऐसे लोगों के दिल हक़ वालों की मुहब्बत से महरूम होता है और ईमान में कमजोरी का सबब बनता है। यही लोग दुनियादार है जिसमे से बहुत सारे काफ़िर व मुशरिक हुए, बहुत मुनाफ़िक़ हुए, बहुत फ़ासिक़ व फ़ाज़ीर हुए आप अपना जायजा ले।

मूहिब के 2 अकसाम

जानना और मानना चाहिए कि मुहिब की 2 किस्में है 1. रश्मि मूहिब (जबानी मुहब्बत का दावेदार) और 2. हक़ीक़ी मूहिब (दिल से मुहब्बत करने वाला)

1. रश्मि मूहिब (जबानी मुहब्बत का दावेदार) : जबानी मुहब्बत सिर्फ झूठा दावा है जो दलील पेश किए बग़ैर हर काफिर, मुर्तद, मुनाफ़िक़ व फ़ासिक़ फ़ाज़ीर और सुल्हकुल्ली के जबान से ज़ाहिर होता है मगर उसके दिल मे बातिल की मुहब्बत छुपी होती है ऐसो लोगों के दिलों में तो खालिस्तन दुनिया की मुहब्बत और नफ़्सानी ख़्वाहिशात का ग़लबा

होता है। इस दौर में ऐसे लोगो को मुआशरे में ऐनुल यकीन के साथ देखा जा सकता है जो काफ़ी तादाद में मौजूद है जिसकी तमाम वक़्त, हिम्मत, ताक़त, दौलत, जान व माल सिर्फ बातिल (यानी नफ़्स, शैतान व दुनिया) के तलब में खर्च होते है।

2. हक़ीक़ी मुहब्बत (दिल से मुहब्बत करने वाला) : यानी हक़ वालों से दिली मुहब्बत वो भी अल्लाह की रजा़ के लिए न कि दुनिया हासिल करने के लिए। जानना चाहिए कि मुहब्बत दो दिलो के बीच एक कैफ़ियत का नाम है जिसका ताअल्लुक जबान से नहीं बल्कि सिर्फ दिल से है हक़ीक़ी मुहब्बत दिल से किया जाता है जिसका अलामत यह है कि तमाम आज़ा महबूब (अल्लाह व रसूल ﷺ) की तरफ मुतवज्जो हो और मूहिब कि तमाम कोशिशे, वक़्त, हिम्मत, इताअत, सुन्नत, कुव्वत, जान, माल व दौलत सब रसूल ﷺ (महबूब) के फ़रमान के मुताबिक उसी के रज़ा के लिए ख़र्च होना चाहिए।

हक़ीक़ी मुहब्बत की अलामत

जो शख्स़ किसी से मुहब्बत करता है वह अपने महबूब का मुतीअ व फरमां बरदार होता है लिहाज़ा जो शख्स़ मुहब्बते रसूल का दावा करे उस पर हुजूरे अकदस का यह हक बनता है कि वह हुजूर की मुकम्मल पैरवी करे। यानी आप की सुन्नतों पर अमल करे, आप की बात और सीरत की पैरवी करे। जिन चीज़ों के करने से हुजूर ने मना फरमा दिया है उनके करने से बचे और जिन कामों के करने का हुक्म दिया है उन पर अमल करने में पहल करे और तंगदस्ती व खुशहाली और खुशी व ग़मी ग़र्ज़ कि हर हाल में हुजूरे अक़दस की ही सीरते तय्यबा को अपनाए।

किसी शायर ने कहा है : अगर तेरी मुहब्बत सच्ची होती तो ज़रूर इताअत (पैरवी) करता क्यों कि मूहिब अपने महबूब का फ़रमाबरदार होता है।

हक़ीकी मुहब्बत ही ईमान है

हक़ को हक़ और बातिल को बातिल मानना ईमान है। मुहब्बत दिल की कैफ़ियत का नाम है जो इंसान को मानने के क़ाबिल बनाता है यानी मनवाता है नबी ﷺ की ज़ात व सिफ़ात को बग़ैर कोई ऐब या नुक्स निकाले दिल से मानना बग़ैर मुहब्बत का नामुमकिन है यानी हक़ मानने के लिए मुहब्बत दरकार है। हक़ की पहचान बताने और तमाम हक़ को लाने वाले हमारे नबी ﷺ है और इस बात को मान लेना ही ईमान है लेकिन इस बात को मानने के लिए हुजूर ﷺ से सबसे बढ़कर मुहब्बत करना होगा इसलिए मुहब्बत ही ईमान है। (मुसन्निफ़)

हुजूर से सबसे ज्यादा महब्बत क्यों ?

ज़ाहिर है कि हुजूर सरवरे अंबिया महबूबे किब्रिया ने अपनी उम्मत के लिए जो जो मशक्क़तें उठाई उनका तकाज़ा और एहसान का बदला यह है कि उम्मती अपने नबी से

सबसे बढ़ कर महब्बत करे यह काम फ़र्ज़े ऐन और कामिल ईमान है। यही महब्बत मुसलमान को सुन्नत पर अमल करने के लायक बनाता है। मगर अफ़सोस आज हम बातिल शय की महब्बत मे मशरूर है और सुन्नत से बहुत दूर है।(मुसन्निफ़)

मुहब्बते रसूल की अक़्ली दलील

ख़्याल रहे हुजूरे अकदस से मुहब्बत का शरई हुक्म तो अपनी जगह पर मुसल्लम है ही इसके अलावा अक़्लन भी हुज़ूर मुहब्बत किए जाने का सब से ज़्यादा हक रखते हैं। चुनांचे आप गौर करें तो मालूम होगा मुहब्बत के तीन असबाब होते हैं "हुस्न व जमाल" "जूद व नवाल" "जाह व जलाल" जिस शख़्स के अन्दर इन असबाव में से कोई एक ही सबव मौजूद हो तो लोग उस से मुहब्बत करते हैं। अब आप अगर गौर करें तो हुज़ूरे अकदस खूबियों की जामेअ है लिहाज़ा आप की ज़ाते गिरामी इन तीनों ही सब से ज़्यादा मुहब्बत किए जाने के लाइक हैं। रिवायतें से साबित है कि हुज़ूरे अक़दसते की मुक़द्दस जाते गिरामी के अन्दर असबाबे मुहब्बत अपनी पूरी जलवा सामानियों के साथ मौजूद हैं।

हज़रत अबू हुरैरा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फ़रमाते हैं: तर्जमा: मैं ने रसूलुल्लाह से ज्यादा हसीन व खूबसूरत किसी को न देखा।

नबी की इताअत व महब्बत की चाहत

इताअत तीन तरह की होती है इताअत डर की, इताअत लालब की, इताअत मुहब्बत की, यहां मकसूद है मुहब्बत की इताअत, क्योंकि डर या लालच की इताअत तो मुनाफेकीन भी करते थे। ख्याल रहे कि मुहब्बत तीन किस्म की है छोटे से मुहब्बत यानी मामता, दूसरी बराबर वाले से मुहब्बत, तीसरे बड़े से मुहब्बत जो अजमत की नीयत से हो मालूम हुआ कि मुहब्बत अजमत की नीयत से होनी चाहिये। फिर अजमत दो किस्म की है दीनी और दुनियावी से मालूम हुआ कि हुज़ूर की अजमल दीनी चाहिये यानी रिसालत की बिना पर मुहब्बत व अजमत चाहिये न कि बढ़ा भाई समझ कर। (शाने हबीबुर्रहमान, पेज 32)

मुहम्मद की मुहब्बत दीन-ए-हक की शर्ते अव्वल है
इसी में हो अगर खामी तो सब कुछ नामुकम्मल है

महब्बत किनसे किया जाए

हज़रते अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह त'आला ने जिन चीजों से मुहब्बत रखने का हुक्म दिया है उन्हें महबूब रखो और जिन चीज़ों से परहेज़ का हुक्म दिया है उन से परहेज करो। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 39, पेज 259)

औलिया अल्लाह से महब्बत की चाहत

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) ऐ महबूब तुम फ़रमाओ मैं इस (नेअमतों व

फ़ज़्ल) पर तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर क़राबत की महब्बत (यानी औलिया अल्लाह से मुहब्बत करने का हुक्म है), (सूरह शूरा, आयात 23)

औलिया अल्लाह दिल को बनाते है

मुफ़्ती अहमद यार ख़ाँ नईमी अलैहिर्रहमा लिखते है "जंग आलूद लोहे को भट्टी की जरूरत है, और जंग आलूद दिलों के लिये सोहबते औलिया व इबादात व रियाज़त दरकार, मगर तासीर (असर) में सोहबत औलिया तेज़ तर (फ़ास्ट) है तिलावते कुरआन पाक स्याही कलब को आहिस्ता आहिस्ता दूर करती है। मगर अल्लाह वालों की नजरे करम आन की आन (फौरन) में काया पलट देती है।(शाने हबीबुर्रहमान, पेज 232 हिंदी)

इंसानों को चाहने/चुनने का इख़्तियार है

अल्लाह का फ़रमान है : जो आख़िरत की खेती (नेयमत) चाहे हम उसके लिये उसकी खेती (नेयमत) बढ़ाएं और जो दुनिया की खेती चाहे हम उसे उसमें (दुनिया) से कुछ (फानी सामान) देंगे और आख़िरत में उसका कुछ हिस्सा नही । (सूरह - शूरा, आयत नं. 20)

चाहत और चुनाव

कुरआन में है : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से तो जो शैतान को न माने और अल्लाह को माने उसने बड़ी मज़बूत गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं। (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

अल्लाह का रास्ता और शैतान के रास्ते

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हमारे सामने एक लकीर खीची और फ़रमाया यह अल्लाह का रास्ता है, फिर आपने उस लकीर के दायें बायें कुछ और लकीरें खींची और फ़रमाया यह शैतान के रास्ते हैं जिन के लिए वह लोगों को बुलाता रहता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 16, पेज 107)

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) बेशक हमने उसे राह बताई की हक़ मानता या नाशुक्री करता।(सुरह इंसान, आयत नं. 3)

दोनों थे इख़्तियार में दुनिया भी दीन भी
देखो तो तलबगारों ने क्या इख़्तियार किया

जैसी चाहत वैसी ने'यमत

कुरआन में है : (तर्जुमा) ''जो दुनिया का इनाम चाहे हम उसमें से उसे दें और जो आख़िरत का इनाम चाहे, हम उसमें से उसे दें और क़रीब है कि हम शुक्र वालों को सिला

अता करें ''(सुरह इमरान, आयत नं. 145)

खास ने'अमते अवामुन्नास को नहीं मिलती

हदीस : हमारे आक़ा रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया ऐ उमर हिदायते रहनुमाई तालिब (चाहने वालों) की इस्तेदाद (क़ाबिलियत) और जिंस (दर्जा) के मुताबिक हुआ करती है। असरारे इलाही (अल्लाह की राज़) की ने'अमते उज़मा (बड़ी ने'अमत) ना अहल (ना क़ाबिल) अवामुन्नास को नहीं दी जाती क्यूंकि उनको ऐसी ने'अमत दे देना इस नेअमत कि ना क़द्री है। (असरारे हक़ीक़ी, हज्ज की हक़ीक़त, पेज 17)

जैसी करनी वैसी भरनी

हदीस : सरकारे दो आलम ﷺ का फरमाने आलीशान है कि ''नेकी पुरानी नही होती और गुनाह भुलाया नही जाता, बदला देने वाला यानी अल्लाह कभी फ़ना नही होगा, लिहाजा जो चाहे कर, तू जैसा करेगा वैसा भरेगा।'' (बहरूद्मुअ, पेज 38)

बन्दो के चाहत के मुताबिक अल्लाह की अता

हदीस : रसूल ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि आख़िरत हासिल करने की चाहत पर (अमल करने वाले को) अल्लाह त'आला दुनिया भी बिन मांगे देता है लेकिन दुनिया (फानी चीजें जैसे माल व दौलत) हासिल करने की नियत पर अमल करने वाले को आख़िरत नहीं मिलेगी। (गुनियतुत्तालिबीन, बाब 17, पेज 505)

हक़ की चाहत रखने वालों को हिदायत

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) अल्लाह ने तुम्हें इस्लाम की हिदायत की अगर तुम सच्चे हो (यानी अगर तुम इस्लाम की चाहत रखते हो)। (सूरह हुज़रात, आयत 17)

चाहत ही मंजिल तक पहुँचाता है

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जुमा) जो आख़िरत चाहे और उसकी सी कोशिश करे और हो ईमान वाला तो उन्हीं की कोशिश ठिकाने लगी। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 19)

अमल करना बंदों के इख़्तियार में नही।

अल्लाह का फ़रमान है : किसी जान की कुदरत (इख़्तियार) नहीं कि ईमान ले आए मगर अल्लाह के हुक्म से (जब तक अल्लाह हुक्म न दे)। (सूरह यूनुस, आयत न. 100)

हर काम अल्लाह के हुक्म से

ये जान ले कि हर काम अल्लाह के हुक्म से ही होता है। कुरआन में है : उसके (अल्लह के) हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं। (सूरह रूम, आयात 25), कुरआन में दूसरी जगह है ''उसी के हैं जो कोई आसमानों और ज़मीन में हैं, सब उसके

(अल्लाह के) ज़ेरे हुक्म हैं" ।(सूरह रूम, आयात 26) आगर किसी के साथ बुरा हुवा तो वो भी अल्लाह का हुक्म से हुवा क्योंकि बुरा इसलिये हुवा की वो उसी लायक था, अगर किसी के साथ अच्छा हुआ तो वो भी अल्लाह के हुक्म से हुवा क्योंकि वो उसी लायक था। अल्लाह का फ़रमान है : जो शुक्र करे वह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो बेशक अल्लाह बेपर्वाह है। (सुरह लुकमान, आयत न. 12)

हुक्मे खुदा की हकीकत:

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : कुछ ज़बरदस्ती नहीं दीन में, बेशक खूब जुदा हो गई है नेक राह गुमराही से, तो जो शैतान को न माने और अल्लाह पर ईमान लाये उसने बड़ी मोहकम गिरह थामी जिसे कभी खुलना नहीं। (सूरह बक़रह, आयत न. 256)

बंदों के चाहत के मुताबिक अल्लाह का हुक्म मे बदलाव

अगर बन्दा नेक अमल की चाहत रखता है तो अल्लाह उसे नेक काम करने का हुक्म देता है और अगर बन्दा नाफरमानी यानी गुनाह का चाहत रखता है तो अल्लाह हुक्म दे देता है यानी इंसानो को चाहने का इख़्तियार है लेकिन अच्छा इनआम और बुरे अंजाम से लोगों को आगाह किया गया है कि बुरा चाहत रखोगे तो बुरा अंजाम यानी दुनिया मे परेशानी, ज़िल्लत, मुसीबत, अज़ाब और आख़िरत में जहन्नम का हक़दार होना होगा इसी तरह नेक काम का अच्छा ईनआम है ।

यानी पहले बंदों की चाहत फिर अल्लाह का हुक्म फिर बंदे का काम फिर अंजाम इसलिए खूब जान लो अल्लाह अपने बंदों पर जरा बराबर भी जुल्म नहीं करता, बन्दा खुद बुरी चाहत रखकर बुरा काम करके बुरा अंजाम का हक़दार होता है।

तौबा की चाहत और अल्लाह का हुक्म

बुखारी व मुस्लिम की हदीस है कि हुजूर ﷺ ने फ़रमाया बनी इस्रायेल में एक शख्स था जिसने निन्नानवे कत्ल किये थे, उसने तौबा करने की चाहत से दुनिया के सब से बड़े आलिम के मुतअल्लिक पूछताछ की तो लोगों ने उसे एक राहिब (कम इल्म वाला) का पता दिया चुनान्चे वह राहिब के पास आया और उससे कहा मैंने निन्नानवे कत्ल किये हैं, क्या मेरी तौबा कबूल हो सकती है? राहिब बोला नही, तो उस आदमी ने राहिब को भी कत्ल करके सौ क़त्ल पूरे कर लिये, फिर उसने दोबारा दुनिया के सब से बड़े आलिम की तलाश शुरू की तो उसे एक आलिम का पता बताया गया, वह आलिम के पास गया और कहा कि उसने सौ क़त्ल किये हैं, क्या इसके लिए तौबा मुमकिन है? आलिम ने कहा हाँ! तेरे और तेरी तौबा के दर्मियान कौन रुकावट हो सकता है! फ्ला फ्ला जगह जाओ वहाँ अल्लाह तआला के नेक, इबादत गुज़ार लोग (औलिया की जमाअत) रहते हैं, तुम भी वहीं जाकर उन के साथ इबादत करो और फिर अपने वतन वापस न होना क्योंकि यह बहुत बुरी जगह है।

चुनान्चे वह चल पड़ा, जब वह आधे रास्ते में पहुँचा तो उसे मौत आ गई, लिहाज़ा उस के मुतअल्लिक रहमत और अज़ाब के फ़रिश्तों का आपस में झगड़ा हो गया, रहमत के रिश्तों ने कहा यह ताइब होकर अपना दिल रहमते खुदावन्दी से लगाये आ रहा था, अज़ाब के फरिश्तों ने कहा इस ने कभी कोई नेकी नहीं की, तब उन के पास आदमी की शक्ल में एक फरिश्ता आया जिसे उन्होंने अपना हकम (इंसाफ करने वाला) मान लिया, उस फरिश्ता ने कहा तुम ज़मीन नाप लो, वह जिस बस्ती के क़रीब था वह उन्हीं में गिना जाएगा, वह शख़्स जब मरा तो नेक लोगों के बस्ती से दूर थे और जहाँ से चला था यानी बुरो को बस्ती से क़रीब थे लेकीन अल्लाह तआला ने बुरों की बस्ती की जमीन की तरफ वही फ़रमाई, उससे हुक्म दिया दूर हो जा और नेकों की बस्ती की जमीन को हुक्म दिया तू क़रीब हो जा और फ़रमाया इन बस्तियों की दूरी नापो तो फरिश्तों ने उसे एक बालिश्त नेकों की बस्ती से क़रीब पाया और उसे बख़्श दिया गया। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब 53)

इब्रत : इस वाकिया से ये पता चला कि बंदा अगर नेक चाहत के बाद उस पर अमल न भी कर सका तो अल्लाह का हुक्म में बदलाव होगा और निजा़त पायेगा।

खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे, बता तेरी रजा क्या है।

चाहत बदलने से हालत बदल गई

हिकायत : रिवायत किया गया है के हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम एक देहात के पास से गुजरे इस देहात में एक धोबी रहता था जिस की वजह से लोग परेशान थे उन्होंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज किया कि आप इस धोबी के लिए दुआ करें के ये आइंदा लौट कर नहीं आये क्योंकि ये हमारा पानी बंद कर देता है इस में थूकता और कपड़ा धोता है और उसे गंदा कर देता है तो जब वो धोबी कपड़े ले कर पानी की नहर की तरफ गया तो हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला की बारगाह से अरज की के ऐ अल्लाह तू इस की तरफ एक ऐसा ज़हरीला सांप भेज जो उसे डंक मारे और ये जिंदा पलट कर वापस नहीं आए धोबी -अपने कपड़े उठा कर पानी के चश्मे के पास पहुंचा और इस वक्त इस के पास -अपने खाने के लिए तीन रोटियां थी तो जब वो पानी में दाखि़ल हो कर कपड़े धोने के लिए खड़ा हुआ तो ऐक पहाड़ की चोटी से एक आबिद उतरा जो वहां इबादत करता रहता था इस ने धोबी से सवाल किया क्या तेरे पास कोई ऐसी चीज है जो तू मुझे खिलाये या मुझे दिखा दे के मैं उसे देख लू या कम से कम इस की खुशबू सुंघ लूं। क्यूंके मैं कई दीनों से मुसलसल भूखा हूं और कोई चीज़ खाने को नहीं मिली तो इस धोबी ने चाहा की इसे रोटी दिया जाए और उसे एक रोटी दे दी तो आबिद ने इस के हक़ में दुआ की के अल्लाह तेरे गुनाह माफ फ़रमा दे और तेरे दिल को हर क़िस्म की गुनाहों से पाक कर दे तो इस धोबी ने दूसरी रोटी भी उसे दे दी आबिद ने फिर दुआ की है कि अल्लाह तेरे अगले

पिछले सारे गुनाह माफ फ़रमा दे तो धोबी ने तीसरी रोटी भी उसे अता कर दी तो इस आबिद ने कहा ऐ धोबी अल्लाह ने तेरे लिए ज़न्नत में एक महल तैयार कर रखा है जिसमे मरने के बाद तू दाख़िल होगा धोबी सारा दिन कपड़े धोता रहा शाम के वक्त सही सलामत -अपने घर वापस लौट आया लोगों ने ईसा अलैहिस्सलाम से शिकायत की के वो धोबी तो जिंदा सलामत वापस लौटा आया है तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसे मेरे पास ले आओ। तो उन्होंने धोबी को बुलाया और वो आप की ख़िदमत में हाज़िर हो गया हजरत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया के तुम मुझे ये बताओ आज तुम ने कौन सी नेकी की है तो धोबी ने पानी पर जाने, फ़कीर को रोटियां अता करने और इस की दुआओं का ज़िक्र किया जो इस बुजुर्ग ने इस के हक़ में दुआ मांगी थी तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया के तुम -अपने कपड़ों का गांठ उठा कर ले आओ वो गया कपड़ा उठा कर लाया जब इन्हें खोला तो उन में काला रंग का ज़हरीला सांप था जिस के मुंह में लोहे की लगाम थी तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उससे फ़रमाया ऐ काले सांप! इस ने लब्बैक अर्ज की तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया के मैं ने तुझे इस धोबी को हलाक़ करने के लिए भेजा था तूने उसे हलाक़ क्यों नहीं किया इस ने जवाब दिया के मेरे इस को हलाक़ न करने की वजह ये है के मैं अल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ इस कपड़ो के गांठ में बैठ गया इसी दौरान पहाड़ से ऐक आबिद सईल जरूरतमंद उतरा इस ने इस से खाना मांगा तो धोबी ने उसे खाना खिलाया इस ने इस के हक़ में दुआएं की जिन में से हर एक पर एक फ़रिश्ता ने अमीन कही वो दुआएं अल्लाह की बारगाह में मक़बूल हुए, अल्लाह ने मेरी तरफ़ फरिश्ता भेजा जिस ने मेरे मुंह में लोहे का ये लगाम डाल दिया और मैंने उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचा सका तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने इस धोबी को हुक्म दिया के तुम अपना अमल करते रहो अल्लाह ने तुझे माफ कर दिया है। (ज़ियाउल वाईज़ीन, ज़िल्द 2, पेज 35)

इब्रत : इस वाकिया से यह साबित होता है कि बन्दो के चाहत और अमल बिना पर अल्लाह का हुक्म बदलता है अगर यह धोबी उस बुजूर्ग को रोटी न खिलाने का चाहत रखता और बुख़्ल से काम लेता तो सांप को काटने का हुक्म हो जाता और धोबी सांप के काटने से हलाक़ हो जाता।

अल्लाह के हुक्म के बगैर मौत नहीं आ सकती

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : कोई जान बे हुक्मे खुदा मर नहीं सकती। (सूरह इमरान, आयत न. 145)

अल्लाह के हुक्म के बगैर जादु से भी नुक़सान नहीं

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : जादु से ज़रर (नुकसान) नही पहुँचा सकते किसी को मगर खुदा के हुक्म से पहुँचा सकते है। (सूरह बक़रह, आयत न.102)

बे हुक्मे खुदा शैतान भी कुछ नही कर सकता है।

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : वो (नाफ़रमानी वाला) मशवरा तो शैतान ही की तरफ़ से है इस लिये कि ईमान वालों को रंज दे और वो उनका कुछ न बिगाड़ सकता बे हुक्मे खुदा के और मुसलमानों को अल्लाह ही पर भरोसा चाहिए। (सूरह मुज़ादला, आयत न. 11)

अल्लाह के हुक्म (इज़्न) के बगैर मुसीबत नहीं आ सकती

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है तर्जमा : कोई मुसीबत नहीं पहुंचती मगर अल्लाह के हुक्म से।(सूरह - तगाबुन, आयत न. 11)

अपना भला कोशिश करने मैं है ?

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : जो अल्लाह की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक अल्लाह बेपरवाह है सारे जहां से। (सूरह - अंकबूत, आयत न. 6)

बुराई खुद की चाहत की वजह से

अल्लाह का फ़रमान है तर्जमा : ऐ सुनने वाले तुझे जो भलाई पहुँचे वो अल्लाह की तरफ से है और जो बुराई पहुंचे वो तेरी अपनी तरफ से है। (कंजुल ईमान , सूरह निसा, आयात न - 79)

मुसीबत (सजा) खुद के चाहत की वजह से

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : जो मुसीबत पहुंची वह इसके सबब से है जो तुम्हारे हाथों ने कमाया (यानी खुद से गुनाह किया)। (सूरह शूरा, आयत न. 30)

खुद का गुनाह खुद के लिए खतरा

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : ऐ लोगो तुम्हारी ज़ियादती तुम्हारे ही जानों का वबाल हैं दुनिया के जीते जी बरत लो फिर तुम्हें हमारी तरफ़ फिरना है उस वक़्त हम तुम्हें जता देंगे जो तुम्हारे कौतुक थे (सूरह यूनुस, आयत न. 23)

खुद का भला व बुरा खुद के चाहत की वजह से

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और बुरा करोगे तो अपना (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 7)

अपना भलाई और बुराई अपने उपर है

अल्लाह फ़रमाता है (तर्जुमा) : जो राह पर आया वह अपने ही भले को राह पर आया और जो बहका तो अपने ही बुरे को बहका और कोई बोझ उठाने वाली जान दूसरे का बोझ न उठाएगी और हम अज़ाब करने वाले नहीं जब तक रसूल न भेज लें। (सूरह बनी इसराएल, आयत न. 15)

अपने आप पर जुल्म करना

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा कंजुल ईमान) : ''बेशक अल्लाह लोगों पर कुछ जुल्म नहीं करता हाँ लोग ही अपनी आप पर जुल्म करते हैं। (सूरह यूनुस, आयत 44)

नोट: आपने आप पर जुल्म करने का मतलब है अपना दिल, दिमाग, जिस्म व ज़िस्मानी आजा़ से गुनाह करना यानी बातिल गिरोह यानी नफ्से अम्मारा, शैतान व दुनिया की इताअत करके कुफ्फा़र के तौर तरिका अपना कर ज़िदगी गुजारना और शरीअत व सुन्नत को हक़ीर जानकर छोड़ देना।

दुनियादार मुसलमान

हदीस : फरमाने नबवी ﷺ है कि जल्द ही तुम्हारे बाद एक कौम आने वाली है जो दुनिया की खुशरंग निअमतें (लजीज़ गिजाए/कॉल ड्रिंक) खायेंगे, खुश कदम घोड़ों (बाइक/कार) पर सवार होंगे। बेहतरीन, हसीन व खूबसूरत औरतों से निकाह करेंगे, बेहतरीन रंगों वाले कपड़े पहनेंगे, उन के मामूली पेट कभी नहीं भरेंगे, उन के दिल ज्यादा दौलत पर भी क़नाअत (संतुष्टि) नहीं करेंगे। सुबह व शाम दुनिया को माअबूद समझ कर उस की इबादत करेंगे, उसे अपना रब समझेंगे, उसी के कामों में मगन और उसी की पैरवी में गा़मजन (व्यस्त) रहेंगे। जो शख्स उन लोगों के जमाना को पाये, उसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की वसीयत है कि वह उन्हें सलाम न करे, बीमारी में उन की अयादत (देखा) न करे, उन के जनाजों में शामिल न हो और उन के सरदारों (दुनियादार इमाम, सदर , सेक्रेटरी) की इज्जत न करे, और जिस शख्स ने ऐसा किया उस ने इस्लाम को मिटाने में उन की मदद की। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 38, पेज 249)

नफ़सानी मुसलमान

हदीस : हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम में तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कौन है जो अल्लाह तआला से अंधेपन का नहीं बल्कि बसारत (रौशनी) का सवाल करता है? बा-ख़बर हो जाओ, जो दुनिया की तरफ माइल हो गया और उस से बे-इन्तेहा उम्मीदें रखने लगा उसका दिल अन्धा हो गया और जिसने दुनिया से अलाहिदगी करली और उस से कोई ख़ास उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला उसे नूरे बसीरत अता फरमा दिया, वह तालीम के बगैर इल्म और तलाश के बगै़र हिदायतयाब हो गया (हिदायत हासिल कर लिया)। आख़िरी जमाने मे तुम्हारे बाद एक क़ौम आएगी जिनकी हुकूमत की बुनियाद क़त्ल और जुल्मो सितम पर होगी, जिनकी अमीरी व मालदारी बुख़्ल (कंजूसी) व तकब्बुर (शोहरत) से भरपूर होगी और नफ़सानी ख़्वाहिशात के सिवा उन्हें किसी चीज़ से मुहब्बत नहीं होगी। ख़बरदार तुम में से कोई अगर वह वक़्त पाये और मालदारी की ताक़त रखते हुए गरीबी पर राज़ी हो

जाये, मुहब्बत पा सकने के बावजूद उन से अदावत पर राज़ी है और अल्लाह की रज़ा में इज्ज़त हासिल कर सकने के बावजूद मलामत (यानी लोगो के नजदीक पागल जैसे) ज़िन्दगी बसर करे तो अल्लाह तआला उसे पचास सिद्दीकों (वलियों) का दर्जा देगा। (मुकाशफुतुल कुलूब, बाब न. 31, पेज 192)

आज हम हक़ीक़ी मुसलमान नहीं रहे

महब्बते रसूल दिल में जमाए रखना है
लोग आसान समझते हैं मुसलमाँ होना

बातिल की मिलावट हमारे जाहिर और बातिन में ग़र्क कर चुकी है इस वजह से हम मुनाफिक़ो में शुमार है । मुनाफ़िक़ का माना है हक़ व बातिल का मिलावट। बातिल यानी नफ़्सानी ख़्वाहिशात, शैतानी खसलते, दुनिया की मुहब्बत, कुफ्फ़ार से मुशाबिहत, मुनाफिक़ो की सोहबत हमे हक़ीक़ी मुसलमान के लायक नहीं रहने दिया। आज हमें उस काबिले रश्क दौर की तरफ पलट जाना चाहिए जिस दौर में हमारे असलाफ सही माइनों में (हक़ीक़ी) मुसलमान थे और चराग की तरह इस्लाम की तजल्ली उन के बाल से फूटी पड़ रही थी कभी वो नेक बख़्ती की ज़मीनों पर काली घटा बन कर बरसते थे कभी वो कुंदती हुई बिजली की तरह कुफ्र का खर्मन जला देते थे। उनकी आवाज़ गूंजती थी तो पहाड़ों के कलेजे दहल जाते थे और दरयाओं का सीना फटने लगता था। यह सही है कि अब वो ज़माना पलट कर नहीं आ सकता लेकिन अगर हम खुद उस ज़माना की तरफ पलटना चाहें तो हमें कौन रोक सकता है। पहले के लोग वो थे कि जिनकी दहशत से लश्करे कुफ्फार में हलचल मच जाती थी।

इश्क कातिल से भी, मकतूल से हमदर्दी भी...
ये बता किस से मोहब्बत की जजा माँगेगा...?

आज हम अपने असलाफ़ का नाम लेवा तो है मगर सोज व मुहब्बत से सीना खाली है इस्लामी उमंगों से दिल वीरान है और गैरते ईमानी से रंगों की आंत सर्द पड़ गई है न वो लज़्ज़त बंदगी है न दौलते इश्क की फिक्र है न जहन्नम की हौलनाक अज़ीयतों की फिक्र है न ज़न्नत की सर्मदी राहतों का शौक, बस दुनिया तलबी की साजिश में पूरी जिंदगी गुलीज़ व पलीद हो कर रह गई है। कहने को तो हम मुसलमान है लेकिन दिल व जिगर की सतह मिल्लते इस्लामिया के ज़िदा जावेद तशवीश से खाली है।

चमन में तुम ने नशेमन बनाए हैं लेकिन
कभी चमन भी बनाया है आशियां के लिए

मौजूदा क़ौम के हालात व अंजाम

हदीस: हज़रत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया अन क़रीब तमाम धर्म की कौमे (यानी यहूदी, ईसाई, जैन, हिन्दु वगैरह) मुसलमानों पर यूं टूट पड़ेगी

जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाह अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फ़रमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग की तरह (यानी दीनदार नहीं होंगे), दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी दुनियादार मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) और तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फ़रमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफ़रत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245)

दुश्मन का ग़लबा व मुसल्लत

हदीस : हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्होने फ़रमाया कि जब किसी कौम में खियानत जाहिर और खुल्लम खुल्ला होने लगती है तो अल्लाह त'आला उस कौम के दिल में उसके दुश्मनों का ख़ौफ़ और डर डाल देता है और जब किसी कौम में जिनाकारी फैल जाती है तो उस कौम में बकसरत मौतें होने लगती हैं। और जो कौम नाप तौल में कमी करने लगती है तो उस कौम की रोजी काट दी जाती है। और जो कौम ना हक फैसला करने लगती है तो उस कौम में खून रेजी फैल जाती है और जो क़ौम अहद शिकनी और बद अहदी करने लगती है उस क़ौम पर उसके दुश्मन को ग़ालिब व मुसल्लत कर दिया जाता है। (मुन्तख़ब हदीस, पेज 132)

वो जमाने में मुअज्जिज थे मुसलमाँ हो कर
और हम ख्वार हुए तारिक-ए-कुरआँ हो कर

अफ़सोस आज कौम के वकार जिल्लत में पड़े है, ख़्वारी व पस्ती की जिंदगी गुज़ार रहे है लेकिन इस बेवकार बेइख़्तियार ज़िदगी के वजूहात पे गौर नहीं करते, ज़रा सोचिए तो सही कितना बड़ा फर्क है कल जिस हाथ में तलवार थी उस में आज मोबाईल है, कल जिस हाथ में घोड़े की लगाम थी आज उस हाथ मै पतंग के डोरे हैं, कल जिस ज़बान पर आयते कुरआंनी व नअते मुस्तफ़ा के नग़मे थे आज उसी ज़बान पर कुफ्रिया फिल्मी गाने है, कल जिस दिल में मुहब्बते रसूल का समंदर मोजें मार रहा था आज उस दिल में फ़िल्मी हीरोईन के नाम है, कल की माएं अपनी औलाद को असलाहाते जंग से आरास्ता होकर जिहाद में जाते हुए देख कर खुश होती थी तो आज की माएं अपनी औलाद को अंग्रेजी लिबास पहन कर सिनेमा हाल जाते हुए देख कर मसरूर होती है कल के बाप अपनी औलाद को गुलामिए मुस्तफ़ा की तालीम देते थे आज के बाप खुदा व रसूल से बेगाना करने वाली तालीम देते हैं, सवाल करता हूं कि आख़िर यह कब तक रहेगा ऐ फ़ज़ंदाने मुस्लिम उठो ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हो जाओ बहुत सो चुके यह वक़्त सोने का नहीं है आज के फुरफ़तन दौर में दुश्मन तुम्हे सोते देख कर सफ़हए हस्ती से मिटा देना चाहते है उठो और कल और आज के फ़र्क़ को मिटा डालो यानी पहले के मुसलमान जैसा बन जाओ।

आज से पूरे चौदह सदी पेशतर
तुम जहां थे चलो फिर वहीं लौटकर

हर आने वाला दौर पहले से बूरा होगा

हदीस : हजरत अनस रदीयल्लाहु अन्हु से रिवायत है के, अल्लाह के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : "हर आने वाला ज़माना पहले ज़माने से बुरा होगा। "(बुखारी शरीफ, हदीस 7068)

मौजूदा दौर के मुसलमानों का हाल

फ़ितनों के इस दौर में मुसलमान बद आमालियों और बद अक़ायद का शिकार हो चुका है कुछ लोग दीन से फिर कर कुफ्र की हद पार कर रहे है (जैसा की हदीस में है कि एक दौर ऐसा होगा की लोग सुबह को मोमिन होंगे और शाम को काफ़िर हा जाएगे) और कुछ लोग गुमराहियत व बदमज़हबियत अपना कर कुफ्र के करीब हो रहे है यानी कोई हक़ को इंकार कर रहा है तो कोई सुन्नत व शरीअ़त को हक़ीर या मज़बूरी समझ कर छोड़ रहा है और कुफ्फार , मुश्रिकीन, हिन्दुवाना रिवाज को अपना लिया है और इस ख्याल में है वो कि मुसलमान है जबकि अल्लाह व रसूल ﷺ के नज़दीक ऐसो को मुनाफिक़ कहा गया है जो 2 तरह का है 1. मुनाफिके अमल और 2. मुनाफिके एतेकादी।

रुब, खुद्दार, दिलेरी, हक परस्ती अब कहाँ
रख लिया अच्छा सा एक नाम और मुसलमान हो गए

नाम का मुसलमान

हदीस : हजरत हसन रज़िअल्लाह अन्हु फरमाते है के रसूल ﷺ ने फ़रमाया : जब लोग इल्म का इज़हार करेंगे और अमल को जाया करेंगे और ज़बानी कलमा से मुहब्बत का इजहार तो करेंगे मगर दिलो में बुग्ज वो किना रखेंगे और रिश्तों और नातो को तोड़ेंगे तो अल्लाह त'आला उनको लानत का मुस्तहिक बना देगा और उनको अंधा बहरा (हिदायत से खाली) कर देगा।(दुर्रे मंसूर)

बे काम का मुसलमान

हज़रत इब्ने उमर रदीयल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवस्सल्लम ने इरशाद फ़रमाया बेशक लोगो की मिसाल उन 100 ऊंटों की तरह है जिनमे से एक भी सवारी के क़ाबिल न हो।(तिर्मिज़ी)

इस हदीस का मतलब यह है कि मुनाफ़िक़ व फासिक़ फ़ज़ीर क़िस्म के लोग बहुत कसीर तादाद में होंगे लेकिन मुत्तक़ी, इखलास वाले और जिहाद करने वाले बहुत कम या न के बराबर होंगे और ये कुर्बे क़यामत की निशानी है।

बेच कर तलवारे खरीद लिए मुसल्ले हमने।
ईमान लूटती रही और हम सज्दे करते रहे।।

नालायक मुसलमान और उसका अंजाम

हदीस : हजरत सोबान रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया अन करीब तमाम धर्म की कौमे मुसलमानों पर यूं टूट पड़ेगी जैसे खाने वाले खाने के बर्तन पर टूट पड़ते हैं सहाबा रदिअल्लाहु अन्हु ने कहा क्या ऐसा मुसलमानों की आबादी की कमी के वजह से होगा आपने फ़रमाया मुसलमान उस जमाने में ज्यादा होंगे लेकिन सैलाब की झाग (कोई काम का नही) की तरह, दुश्मन के दिल से मुसलमानों का रोब व दबदबा निकल जाएगा (यानी मुसलमानों से काफिर नहीं डरेंगे) तुम्हारे दिल में वहन डाल दी जाएगी सहाबा रदिअल्लाहु अन्हुम ने पूछा कि वहन क्या चीज है आपने फ़रमाया दुनिया से मोहब्बत और मौत से नफ़रत (सुनन इब्ने दाउद, हदीस न. 2245

मांगने से पहले मांगने के लायक बनो

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा कंजुल ईमान): पुकारने वाले जब मुझे पुकारे तो उन्हें चाहिए मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान लायें कि कहीं राह पाये (यानी कामयाब हो जाये)। (सूरह बक़रह, आयात न. 186)

किसी के दिल मे ख़ौफ़े ख़ुदा न होगा

हदीस : फ़रमाने नबवी ﷺ है जिसे हज़रत मअक्ल बिन यसार रदीयल्लाहु अन्हु ने रिवायत किया है कि लोगों पर ऐसा जमाना आएगा जब लोगों के दिलों में कुरआन मजीद बदन के कपड़ों की तरह पुराना हो जाएगा (यानी कुरआन का कोई अहमियत नही होगा जैसा की आज हमारे दिलों में कुरआन को काई अहमियत नहीं) उनके तमाम अहकामात तमअ (लालच) पर मबनी होंगे, किसी के दिल में खौफे खुदा नहीं होगा, अगर उनमें से कोई एक नेकी करेगा तो कहेगा यह मुझसे कबूल करली जाएगी और अगर बुराई करेगा तो कहेगा यह बख्श दी जाएगी। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 81, पेज 466)

वो अँधेरा ही भला था की कदम राह पे थे
रौशनी लाइ है मंजिल से बहुत दूर हमें

ज़बानी कलमा सिर्फ दावा है

ज़बान से कलमा पढ़ना सिर्फ दावा है और उसकी दलील बातिल खुदाओं जैसे नफ़्से अम्मरा, शैतन और मुर्तियों का रद्द करके अल्लाह को एक मानना, अल्लाह ही का फरमाबरदारी करना, अल्लाह के सिवा किसी पर भरोसा न करना, अल्लाह ही से डरना और अल्लाह की रज़ा के लिए हर काम को करना, दिल से तमाम हक़ बातो को मानना, ईमानी खसलातों को अपनाना और ज़िस्म से नेक अमल करना साथ साथ बातिल खुदाओं का इनकार करना, बातिल चीजों से परहेज़ करना। (मुसन्निफ़)

जबान और दिल का मुसलमान होना

फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ : बखुदा बन्दा उस वक्त तक कामिल मुसलमान नहीं बनता जब तक कि उस की ज़बान और दिल इस्लाम कबूल न करें। (मुकाशफ़ूतुल कुलूब, पेज410)

वो बातें न कहो जो करो नहीं

अल्लाह त' आला फ़रमाता है : ऐ मुसलमानों क्यों कहते हो वो जो नहीं करते। कैसी सख्त नापसन्द है अल्लाह को वो बात कि वो बात कहो जो न करो। (सूरह सफ़, आयत न. 2-3)

हिकायत व इब्रत :

हज़रत सूफी सरमद शहीद पर इल्ज़ाम था के आप पूरा कलमा नहीं पढ़ते थे, आप "ला इलाहा" से ज़्यादा नहीं पढ़ते थे, आप को मज्लिस के सामने बुलाया गया, उस मज्लिस में अलावा औरंगज़ेब के उल्माए असर भी मौजूद थे। औरंगज़ेब ने उल्मा को मुखातिब करके कहा, "इस से कहो के कलमाए तय्यब पढ़े" । आप से कलमाए तय्यब पढ़ने को कहा गया। आप ने आदत के मुआफिक "ला इलाहा " पढ़ा, जब उल्मा ने यह जुम्लाए नफी सुना तो सख्त बर्हम हुए, आप ने जवाब दिया के " अभी तो में नफी में मुस्तगरक हूँ, मर्तबाए अस्बात तक नहीं पहुँचा हूँ अगर اِلَّا اللہ कहूँगा तो झूट होगा" । उल्मा ने आपस में तए किया के आप का यह फेल कुफ्र है। इस फेल से तौबा लाज़मी है। आप ने तौबा ना की, उल्मा ने फत्वा दिया के कतल जाएज़ है। दूसरे दिन आप कतलगाह में ले जाए गए। जब जल्लाद ने चमकती तल्वार ले कर आप के पास आया, आप उसे देखकर मुस्कुराए नज़र उठाई और नज़र मिलाई और यह तारीखी अल्फाज़ फरमाए "मैं तेरे कुर्बान हूँ, आ आ के जिस सूरत में भी आए मैं तुझको खूब पहचानता हूँ" । शहादत के बाद आप के सर से तीन बार " لَا اِلٰہَ اِلَّا اللہ की आवाज़ सुनाई दी। आप के सर ने कलमा ही नहीं पढ़ा बल्के कुछ देर हम्दे बारी त' आला में भी मसरूफ रहा।

ज़ुबां से कह भी दिया 'ला इलाहा' तो क्या हासिल
दिल में ईमान नहीं दाखिल तो कुछ भी नहीं कामिल

जबानी कलमा गो को आज़माया जाएगा

अल्लाह त' आला फ़रमाता है : (तर्जमा) क्या लोग इस घमण्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिए जाएंगे कि (जबान से) कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी। (सूर : अंकबूत, आयत न 1)

आज मुनाफ़िक़ों का दौर है

हदीस : फ़रमाने मुस्तफ़ा ﷺ है (तर्जुमा) मेरी उम्मत के अक्सर लोग मुनाफिक़ कारी हैं (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 77)

मुनाफ़िक़ नमाज़ी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र (रजिअल्लाहु तआला अन्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों पर एक ऐसा ज़माना भी आयेगा कि वो मस्जिदों में इकट्ठे होंगे और बा जमाअत नमाज़ पढ़ेंगे लेकिन उनमें मोमिन न होगा। (इब्ने अबी शैबा 6/163-हदीस 30355, (इमाम हाकिम-अल इमाम मुस्तदरक- 4/489-हदीस-8365)

माल और इज्जत की मुहब्बत निफाक़ है

तहकीक इंसान सरकशी करता है इस लिए कि वह खुद को गनी और बेपरवाह समझता है। मजीद फ़रमाया तुम्हें कसरते माल की तलब ने हलाक कर दिया फ़रमाने नबवी है कि जैसे पानी सब्जियां उगाता है उसी तरह माल और इज्जत की मुहब्बत इंसान के दिल में निफाक (मुनाफ़िक़त) पैदा करते हैं। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 38, पेज 248)

लिहाजा माल - दौलत व इज्जत की चाहत दिल में रखकर मुनाफिक़ न बनो।

कलमे के असली मायने से बेख़बरी निफाक़ है

सरकारे दो आलम ﷺ फ़रमाया - मोमिन वो नहीं है जो मस्जिदों मे जमा होते है और सिर्फ़ जुबान से "ला इलाह इल्लल्लाह" कहते है। ऐ उमर ऐसे कलमा पढ़ने वाले जो कि कलमे की हक़ीक़त को ही नहीं जानते और कलमे के असली मायने से ही बेख़बर हैं वो मोमिन नहीं है बल्कि मुनाफिक़ है।(असरारे हक़ीक़ी, मक्तूबात ख़्वाजा गरीब नवाज)

निफाक/मुनाफक़त किसे कहते है ?

हक़ व बातिल के अमेजिस (मिलावट) को निफाक़ कहते है और इसी को गुनाह भी कहते है। निफाक के वजह से इंसान का जबान, जिस्म और दिल एक जैसा नहीं रहता यानी जबान हक़ की तरफ और जिस्म या दिल बातिल के तरफ वहीं जाहिर व बातिन का एक होना ईमान कहलाता है ऐसे खसलत वाले लोगों का मोमिन कहते है लेकिन नफ़्सानी ख्वाहिशात, शैतानी खसलतें, दुनिया की मुहब्बत (दुनियादारी), कुफ़्फार की मुसाबिहत (तौर तरीका), बदमजहबों की सोहबत (संगती) इसमें से एक किस्म भी जिस मुसलमान के अन्दर मौजूद हो तो वो मुनाफिक़ है। मुनाफिक के दो किस्में 1 मुनाफिक़े एतेकादी (यानी अक़ायत में बातिल का मिलावट/कुफ्र)2. मुनाफिक़े अमली (यानी आमाल में बातिल का मिलावट/नाजा़यज व हराम)इसका तफसील आगे बयान की गई है।

हदीस शरीफ है : (तर्जुमा) : हज़रते अबू सईद खुदरी से मरवी है ऐसा दिल जिस में ईमान और निफ़ाक़ दोनों हों ऐसे दिल में ईमान सब्ज़े की तरह है जो मीठे पानी से नश्वो नुमा पाता है और निफ़ाक ऐसे जख़्म की तरह है जो पीप और गन्दे खून से फैलता जाता है, इन में से जो चीज़ गालिब आ जाती है दिल पर उसी का हुक्म चलता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 77)

सज्दा खालिक को भी, इब्लीस से याराना भी...
हश्र में किस से अकीदत का सिला माँगेगा...?

निफाक (गुनाह) की दो किस्में

हुजूर इमाम गज़ाली रहमतुल्लाह अलैह तहरीर फ़रमाते है ''निफ़ाक़ की दो किस्में हैं : एक किस्म वोह है जो दीन व ईमान से निकाल कर काफ़िरों में शामिल कर देती है और उन लोगों (कुफ़्फार) के साथ मुन्सलिक कर देती है जो हमेशा हमेशा के लिये जहन्नम में रहेंगे, दूसरी किस्म वोह है जो कुछ मुद्दत जहन्नम में पहुंचाएगी या उस के बुलन्द मरातिब को कम कर देगी और उसे सिद्दीकों के बुलन्द तरीन मक़ाम से नीचे गिरा देगी। येह निफ़ाक़ की वोह किस्म है जो ईमान की अस्ल के नहीं बल्कि इस की सफाई, कमाल, हक़ीक़त और सिद्क के खिलाफ है।(मुकाशफतुल कुलूब, बाब 77)

1. मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी (अक़ायद में बातिल का मिलावट) : वह है कि ज़बान से तो इस्लाम का इज़हार करता हो मगर अपने दिल में कुफ्र छुपाए हुए हो यानी ईमान व अकाइद में ही बातिल का मिलावट है यानी जरूरियाते दीन में से कम से कम किसी एक बात का भी इंकार करना जैसे अंबिया की तौहिन, रसूलल्लाह ﷺ सिफात का इंकार करना, असहाब को गाली देना वगैरह । इस उम्मत के 72 फिरके मुनाफ़िक ए ऐतिकादी है। कुफ्री अकायद के सबब ये लोग जहन्नमी है इसकी दलील इस इस हदिस से -

72 फिर्के जहन्नमी

हदीस : हज़रते इब्ने उमर रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया कि बनी इस्राईल 72 फिक्रे में बट गए थे और मेरी उम्मत 73 फिक्रे में बंट जाएगी उनमें एक मज़हब वालों के सिवा बाकी तमाम मज़ाहिब वाले जहन्नमी होंगे सहाबा ए किराम ने अर्ज़ किया या रसूल ﷺ वोह एक मज़हब वाले कौन है तो हुजूर ने फ़रमाया कि वह लोग इसी मज़हबो मिल्लत पर कायम रहेंगे जिसपर मैं हूँ और मेरे सहाबा हैं (तिर्मिज़ी हदीस नं 171, अबू दाऊद, हदीस नं 4579, इब्ने माजा, सफह 287)

अल्लाह ﷻ फ़रमाता है : (तर्जमा कंज़ुल ईमान) : वो जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ (बातिल) चीज़ की आमेज़िश (मिलावट) न की उनहीं के लिये अमान (हिफाज़त) है और वही राह पर हैं। (सूरह अन'आम, आयत न. 82)

हुजूरे अकरम ﷺ के ज़माने मे अब्दुल्लाह बिन उबइ वग़ैरह मुनाफ़िक़ों की एक जमाअत थी कि येह लोग बज़ाहिर कलिमा पढ़ते थे रोज़ा, नमाज़, हज्ज, और ज़कात के भी पाबन्द थे। मगर दिल से इस्लाम के मुन्किर थे। इस दौर में राफ़ज़ी, शिया, वहाबी, कादयानी, देवबन्दी, अहले हदीस, वगैरह है जो हुजूर ﷺ व असहाबा को तौहीन करके काफिर हुए। येह वह लोग है जिनके अक़ीदे में ही निफाक़ है। मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी काफ़िर है बल्कि काफ़िर से भी बदतर है यानी मुरतद। कुरआन ए करीम का फ़रमान है कि "इन्नल मुनाफिकीन फिद्दणकल असफल मिनन नार" यानी मुनाफिक़ ए ऐतिक़ादी को जहन्नम के सब से निचले तबके में डाल दिया जाएगा।

1 फिर्का ज़न्नती

एक फिर्का ज़न्नती होगा जो अहले सुन्नत व जमात है यानी सुन्नी सहीहुल अक़ीदा

मुनाफिक़ ए अमली (आमाल में बातिल की मिलावट़):

जिसके ईमान व अक़ीदे में कोई ख़राबी नहीं बल्कि वह ज़ाहिर व बातिन में मुसलमान होता है (नाक़िस ईमान वाला)। लेकिन उसके बाज़ आ'माल और खसलतें बातिलों व कुफ़्फार (के तौर तरीकों) से मिलती जुलती है यानी आ'माल में बातिल की मिलावट यानी सगीरा-कबीरा गुनाह । आ'माल में निफाक ईमान को नाक़िस (अधुरा) कर देता है।(इस मुनाफिक़ को फासिक व फाजिर भी कहा जाता है जो 2 किस्म के है 1. फासिके़ मोअल्लिन, 2 फासिके बातिन) (मुन्तख़ब हदीसें, पेज 66 ,अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी)

मोमिन और मनाफिक़ ए ऐतिकादी में फर्क

मोमिन का दिल, जिस्म और जबा़न एक होता है यानी जो दिल में है वही जबान में और उसी के मुताबिक ज़िस्मानी अमल, मोमिन का दिल बातिल चाहतों और खसलतों से पाक होता है इसकी चाहते आख़िरत और खसलते ईमानी से पूर होता है। मुनाफिक ए ऐतिकादी का दिल में कुछ और जबान में कुछ और अमल कुछ और दिल में कुफ्र (यानी किसी हक़ बात का इंकार) होता है, जबान से कलमा और जिस्मानी तौर पर अमल नमाज़, रोजा, हज्ज, ज़कात वगैरह।

मुनाफिक ए ऐतिकादी के ताअल्लूक से एक कुरआनी आयत व शाने नुज़ूल जिसे हुज़ूर आला हज़रत ने अपनी किताब तम्हीदे ईमान में नक़ल फ़रमाया : आयते करीमह और शाने नुज़ूल : इब्ने जरीर व तबरानी व अबू शेख व इब्ने मर्दवैह अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضي الله عنه से रिवायत करते हैं। रसूलुल्लाह ﷺ एक पेड़ के साये में तशरीफ़ फरमा थे। इरशाद फ़रमाया, अनकरीब एक शख्स आएगा कि तुम्हे शैतान की आँखों से देखेगा। वह आए तो उससे बात न करना। कुछ देर न हुई थी कि एक करंजी आँखों वाला सामने से गुज़रा। रसूलुल्लाह ﷺ ने उसे बुलाकर फ़रमाया : तू और तेरे रफीक किस बात पर मेरी शान में गुस्ताख़ी के लफ्ज़ बोलते हैं। वह गया और अपने रफीकों को बुला लाया। सब ने आकर कसमें खाईं कि हमने कोई कलिमा हुज़ूर की शान में वे अदबी का न कहा। इस पर अल्लाह (अज़्ज़ावजल्ला) ने यह आयत उतारी कि तर्जमा : *खुदा की कसम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। बेशक ज़ुरूर उन्होंने कुफ्र की बात कही और इस्लाम में आने के बाद काफिर हो गये ।* (सूरह तौबा, आयत न. 74) देखो! अल्लाह गवाही देता है कि नबी की शान में बे-अदबी का लफ्ज़ कलिमाए- कुफ्र है और उसका कहने वाला अगरचे लाख मुसलमानी का मुद्दई, करोड़ बार का कलिमा गो हो, काफिर हो जाता है। (तमहीदे ईमान, पेज 32)

देखिए अल्लाह त'आला ने खुल्लम खुल्ला फ़रमाया कि वह लोग मुसलमान थे कलमा पढ़ने वाले थे और नमाज़ व रौज़ह करने वाले थे मगर हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम की शान में बेअदबी का लफ्ज़ बोलने के सबब काफिर हो गये मुसलमान नहीं रह गये।

मोमिन और मुनाफ़िक़ ए अमली में फर्क

रसूलुल्लाह ﷺ से मोमिन और मुनाफ़िक़ के मुतल्लिक पूछा गया। आप ने फ़रमाया कि मोमिन की हिम्मत नमाज़ और रोज़े की तफ़ रहती है और मुनाफ़िक़ की हिम्मत जानवरों की तरह खाने पीने की तरफ रहती है और वोह नमाज़ रोज़े की तरफ़ मुतवज्जेह ही नहीं होता। मोमिन अल्लाह की राह में खर्च करने और बख़्शिश तलब करने में मश्गूल रहता है जब कि मुनाफ़िक़ हिर्स व हवस में मसरूफ रहता है, मोमिन अल्लाह त'आला के सिवा किसी से उम्मीद नहीं लगाता और मुनाफिक अल्लाह त'आला के सिवा तमाम मख़्लूक की तरफ रुजूअ होता है, मोमिन दीन को माल से मुक़द्दम समझता है और मुनाफ़िक़ माल को दीन पर तरजीह देता है, मोमिन अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरता और मुनाफिक अल्लाह के सिवा हर चीज़ से डरता है, मोमिन नेकी करता है और अल्लाह की बारगाह में रोता है, मुनाफ़िक़ गुनाह करता है और खुश होता है, मोमिन खल्वत व तनहाई को पसन्द करता है, मुनाफ़िक भीड़ भाड़ और मेल जोल को पसन्द करता है, मोमिन बोता है और फ़स्ल की बरबादी से डरता रहता है और मुनाफ़िक़ फ़स्ल उजाड़ देने के बा'द काटने की तमन्ना रखता है। मोमिन दीन की तदबीर के साथ अच्छाइयों का हुक्म देता है, बुराइयों से रोकता है और इस्लाह करता है, मुनाफ़िक़ अपनी हैबत और सत्वत के लिये फ़ितना व फसाद बरपा करता है और नेकियों से रोकता और बुराइयों का हुक्म देता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 7, पेज 64)

मुसलमान के 2 अक़साम

मुसलमान (सुन्नी) 2 तरह के है।

1. दीनदार व परहेज़गार सुन्नी - जो मुसलमान अल्लाह व रसूल की ज़ात व सिफात को मानने के साथ अहकाम पर भी अमल करते है यानी शरीअ़त व सुन्नत के मुआफिक़/मुताबिक ज़िदगी गुजारते है। ये तमाम जरूरियाते दीन को मानते है। इनके दिल में खौ़फे खुदा, इश्के मुस्तफ़ा, रजा़ए इलाही, अल्लाह पर भरोसा, औलिया से अक़ीदत व महब्बत और नेयमतो पर शुक्र व मुसिबतों पर सब्र, सख़ावत, इसार, रहम दीली, हुस्ने अख़लाक, हया जैसे ईमानी खसलतों को अपना कर नफ़्सानी ख्वा़हिशात, शैतानी खसलतों, दुनिया की मुहब्बत, कुफ्फा़र से मुसाहिबत और बदअक़िदों की सोहबत से परहेज़ और मुखालिफ़त करते है। ऐसे मुसलमानों को मोमिन या सहीहुल अकी़दा सुन्नी कहा जाता है ये गिरोह हक़ व बातिल की मिलावट नहीं करते है । इस दौर में ऐसे लोग बहुत कम है।

2. दुनियादार/गुनाहगार सुन्नी :- मुसलमान जो अल्लाह व रसूल ﷺ को मानने के साथ साथ नाफ़रमानी, बदआमाली, बदमज़हबीयत, गुमराही के मुर्तकिब होते है जिनका गुमराही या बदआमाली या बदमज़हबीयत हद्दे कुफ्र तक न पहुंचा हो जो जरूरियाते अहले सुन्नत में से किसी बात को न मानता हो। ऐसे लोगो को फा़सिक व

फाज़िर और सुलहकुल्ली, बदमज़हब या मुनाफ़िके अमली/फासिक व फाजी़र भी कहा जाता है यानी ये आमाल में बातिलों का अमेजिस करते है। ये लोग नाकि़स/कमजो़र ईमान वालें होते है। इस दौर में ऐसे मुसलमानों की तादाद पूरी दुनिया में कसरत से पाई जाती है जो सुन्नी अवाम कहलाते है। ऐसे लोगो से अल्लाह नाराज़ होता है।

मुनाफिक ए अमली (फा़सिक़ फा़जी़र) के 2 अकसाम

1. फा़सिके मुअल्लिन - एलानिया (खुल्ला में खुल्ला) सगीरा व कबीरा गुनाह करने वाले लोग जिसका अक़ाइद सहीह हो लेकिन ज़ाहिरी अमल कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन के मुसाबेह हो यानी शरीअत और सुन्नत के खिलाफ उसे फ़ासीके मुअल्लिन कहते है। जैसे दाढ़ी मुंडवाना, नमाज़ छोड़ना, तर्के रोज़ा , शराब नोसि यानी वैसे तमाम गुनाह जिसका करने से दूसरे लोग गवाह बनते है।

2. फ़ासिके बातिन - फ़िस्के बातिन (छिप छिप कर) सगीरा व कबीरा गुनाह करने वाले लोग जिसका ज़ाहिरी अमल बज़ाहिर सही मालूम हो और कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन से मुसाबेह न हो लेकिन बातिन में बातिल मख़लूख जैसे नफ़्सानी व शैतानी खसलत और दुनिया की मुहब्बत दिल मे मौजूद हो जैसे माल की लालच, ख़्वाहिशात, दुनिया की मुहब्बत, रिया, तकब्बुर, खुदपसन्दी, हसद, बदगुमानी वगैरह।

यूँ तो सय्यद भी हो मिर्ज़ा भी हो अफ्गान भी हो
तुम सभी कुछ हो बताओ तो सच्चा मुसलमान भी हो

मोमिन बनो मोमिन

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) :

"न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्ही गा़लिब आओगे अगर ईमान रखते हो"।

(सूरह इमरान, आयत नं. 139)

ऐ मुसलमानों अगर तुम इख्ति़यार व इक़तदार चाहते हो, इज़्ज़त व वकार चाहते हो तो मोमिन कामिल बन जाओ, सिलसिलए ईमान में मुंसलिक हो जाओ और अपनी जबीने नियाज़ को खुदा की मुकद्दस बारगाह में झुका दो अपने खानए दिल को महबूबे खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का मदीना बना लो, फिर दुनिया की तमाम बुलंदियां तुम्हारी बुलंदी पर रश्क करेंगी, यही पैगाम था जिस ने इन्सान की पेशानी को माबूदे हकीकी की बारगाह में झुका दिया था, यही पैगाम था जिसने इन्सान के दिल को रसूल की मुहब्बत में सरशार कर दिया था कि उन्हें नामे रसूल पे जान कुर्बान कर देने में हयाते जावेदानी नज़र आती थी।

मोमिन बनने की चाहत

जान लो कि अल्लाह को राज़ी करने के लिए तौबा के बाद ईमान शर्त है और ईमान अमल

करने का नाम नहीं बल्कि हक को मानकर नेक बनने का नाम है। जब तक इंसान पूरी तरह ईमान ना लाये तब तक वो अमल करने के क़ाबिल यानी दीनदार नहीं बनता और उस पर नेक अमल करना फ़र्ज़ नहीं करार दिया जाता है। यानी पहले ईमान (यानी बनों) फिर अमल (यानी करो) अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : बेशक जो ईमान लाए और (उसके बाद) अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब (राज़ी होकर) उन्हें राह देगा , उनके नीचे नेहरें बहती होंगी नेअमत के बाग़ों में। (सूरह युनुस, आयत 9)

आज भी हो जो इब्राहिम सा ईमान पैदा
आग कर सकती है अंदाज़ ए गुलिस्तां पैदा

ईमान सबसे बड़ी दौलत है,

ईमान है तो अल्लाह साथ है, अल्लाह की रहमतें और बरकतें है। ये बात अच्छी तरह जान लो कि इन्सान की क़ाबिलियत और आ'माल की क़बूलियत के लिए ईमान शर्त है।येह बात अच्छी तरह से जान लो कि ईमान एक चीज़ का नाम नहीं। ईमान एक दरख्त की मानिन्द है और ईमान की खसलतें उस दरख्त की शाख की मानिंद। दरख्त यानी कामिल ईमान जो हुजूर की महब्बत व तअज़ीम है और शाखें यानी ईमान की खसलतें इश्के नबी और तअज़ीमे नबी के बाद की खसलतें है। जब दरख्त ही न हो तो उसकी शाख़ कैसी यानी जब इश्के नबी और तअज़ीमे नबी न हो तो बाकी खसलतें कैसी । बग़ैर इश्के नबी और तअज़ीमे नबी के तमाम खसलतें फिस्क व निफाक़ में शुमार होंगे और तमाम इल्म व अमल बेकार जैसा की इब्लिश का अंजाम हुआ। (मुसन्निफ)

गया शैतान मारा एक सज्दे के न करने में
अगर लाखों बरस सज्दे में सर मारा तो क्या मारा

हिदायत ईमान के बदौलत

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा) : जो अल्लाह पर ईमान लाए अल्लाह उसके दिल को हिदायत फ़रमादेगा।(सूरह - तगाबुन, आयत न. 11)

कुरआन में अल्लाह का फ़रमान है (तर्जुमा कंजुल ईमान) : ''बेशक जो ईमान लाए और अच्छे काम किये उनका रब उनके ईमान के सबब उन्हें राह देगा''। (सूरह युनुस, आयत नं. 9)

अमल की मक़बुलियत ईमान के बदौलत

दुसरी जगह फ़रमाया (तर्जुमा कंजुल ईमान) : ''जो कुछ भले काम करे और हो ईमान वाला तो उसकी कोशिश की बेक़दरी नहीं, और हम उसे लिख रहे हैं। (सुरह अंबिया, आयत न. 94)

इस फ़रमान से पता चला कि ईमान वालों की कोशिश की कद्र की जाएगा। इसलिए पहले पूरी तरह से मोमिन बनों फिर अमली मैदान में आवो।

दुआ की क़बुलियत ईमान के बदौलत

दुसरी जगह कुरान में है : अल्लाह दुआ कुबूल फ़रमाता है उनकी जो (पहले) ईमान लाए और (बाद में) अच्छे काम किये। (सूरह शूरा, आयत न. 26)

फिर फ़रमाया (तर्जुमा कंजुल ईमान) ''न सुस्ती करो और न ग़म खाओ तुम्ही ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो'' (सूरह इमरान, आयत न 139)

हिफ़ाजत ईमान की बदौलत

फिर फ़रमाया (तर्जुमा कंजुल ईमान) :''अल्लाह तुम्हें अज़ाब देकर क्या करेगा अगर तुम हक़ मानो और ईमान लाओ।''(सूरह निसा, आयत 147) पता चला अल्लाह ईमान से राजी़ होता है , बग़ैर मज़बुत ईमान का अमल नामक़बूल होता है लिहाजा आपको बहुत सी बातों पर ईमान लाने की जरूरत है।

अल्लाह वालों ने किताबों में लिखा (तर्जुमा) : जब तक हम अल्लाह त' आला की सिफ़ात पर ईमान नहीं लायेंगे तब तक मोमिन नहीं । हमें अल्लाह त' आला की हर सिफ़त को मानना पड़ेगा। जो चीज भी अल्लाह त' आला ने बनाया है उसमें भी कोई ना कोई सिफ़त जरूर रखा है। (बहरुल हक़ायक़, पेज 250) दुसरी जगह मीर सैय्यद अब्दुल वाहिद बिल ग्रामी लिखते है "ऐ सच्चे सुन्नी तुझे बहुत सी बातों पर भी ईमान लाना जरूरी है इसलिए कि अल्लाह त' आला को तू देख नहीं सकता। और फरिश्ते न तुझे महसूस हैं न वह तेरी नजर में समाए हुए और तमाम नबियों और रसूलों ने पर्दा फ़रमाया और रहमत की आराम गाहों में आराम कर रहे हैं और आख़िरत की तमाम बातें और क्यामत की हालतें आने वाली चीजें है लिहाजा तू इन सब पर बे देखे ईमान ला" जो इल्मे जाहिर व बातिन से मुमकिन है इस इल्म को पाने की चाहत रख ताकी अल्लाह तुझे उस लायक बनाये। (सबअ सनाबिल शरीफ़, सुंबुला 1, पेज 37) इससे पता चला ईमान एक चीज का नाम नहीं सिर्फ अल्लाह को न मानों बल्कि अल्लाक के हर फ़रमान को भी मानों।

अमल करने से पहले ईमान का जायजा लो

ऐ दुनियादार यानी फासिक व फाजिर इंसान आज तू पहले अपना ईमान का जायजा ले और जरा सोंच और अपनी गुजरी हुई ज़िन्दगी पर गौ़र व फिक्र कर कि गुनाहों के जरिए तुम्हारा जुर्म और जुल्म कितना है क्या तू अल्लाह के नजदीक ईमान वाला है अगर है तो कितना मजबूत ईमान है। कमजो़र ईमान से अल्लाह राजी़ नहीं होता इसलिए ईमान के लिए अच्छा और सच्चा इंसान बन। नेकों की सोहबत इख़्तियार कर ताकि तू भी नेक बन सके फिर अमल के मैदान में उतर वरना कमजो़र ईमान वालों को नफ़्से अम्मारा, शैतान , दुनिया व मालो दौलत गुमराह करके कुफ्र की हद तक पहुंचा देता है और इंसान को पता भी नहीं चलता । इसलिए होशियार हो जा। (मुसन्निफ)

ईमान वालों के अमल की क़द्र की जाएगी

अल्लाह का फ़रमान है : तर्जमा : जो कुछ भले काम करेगा मर्द हो या औरत और हो ईमान वाले तो वो ज़न्नत में दाख़िल किये जाएंगे और उन्हें तिल भर नुक़सान न दिया जाएगा (कंज़ुल ईमान, सुरह निसा, आयत न. 124)

अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करता है

कुरआ़न में है : अल्लाह मोमिनों पर फ़ज़्ल करता है।(सूरह इमरान, आयत न. 152)

ईमान वालों के लिए अमान (हिफ़ाजत)

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जमा कंज़ुल ईमान) : वो जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ (बातिल) चीज़ की आमेज़िश (मिलावट) न की उनहीं के लिये अमान (हिफाज़त) है और वही राह पर हैं। (सूरह अन'आम, आयत न. 82)

ईमान वालों के लिए ज़न्नत

अल्लाह का फ़रमान है : (तर्जमा कंज़ुल ईमान) : जो ईमान लाए और ताक़त भर अच्छे अमल किये हम किसी पर ताक़त से ज़्यादा बोझ नहीं रखते, वो ज़न्नत वाले हैं उन्हें उस में हमेशा रहना (सुरह : अराफ़, आयत न. 42)

मोमिन की इज़्ज़त का'बे से ज़्यादा है

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हुमा फरमाते हैं मैंने हुज़ूर सैय्यदे आलम ﷺ को देखा कि काबा मुअज्जमा का तवाफ़ करते और फ़रमाते : ऐ काबा तू कितना पाकीज़ा है और तेरी खुशबू कितनी पाकीज़ा है, तू कैसा अज़ीम है और तेरी हुर्मत कितनी बड़ी है, क़सम उसकी जिसके कब्ज़-ए-कुदरत में मुहम्मद ﷺ की जान है बेशक अल्लाह त' आला के नज़दीक मोमिन की इज़्ज़त तेरी इज़्ज़त से बहुत ज़्यादा है। (फैज़ाने आला हज़रत, पेज न. 79)

असल नेकी ईमान और ईमान की खसलतें हैं

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : असल नेकी येह नहीं कि मुँह मशरिक़ या मग़रिब की तरफ़ करो (नमाज़ की शक्ल में) हाँ असल नेकी येह कि ईमान लायें अल्लाह और कयामत और फरिश्तों और किताब और पैग़म्बरों पर और अल्लाह की महब्बत में अपना प्यारा माल खर्च करे रिश्तेदारों और यतीमों और मिस्कीनों और राहगीर और साइलों को और गरदने छुड़ाने में और नमाज़ कायम रखें और ज़कात दें और जब अहद करें तो अपना कौल (वादा) पूरा करने वाले और मुसीबत, सख्ती में और जिहाद के वक़्त सब्र वाले यही हैं जिन्होंने अपनी बात सच्ची की और यही परहेज़गार है। (सूरह बक़रह, आयत न. 177)

सबसे अफ़ज़ल अमल ईमान लाना है :

हज़रते सय्यिदुना उबादा बिन सामित बयान करते हैं कि एक शख़्स ने बारगाहे रिसालत में हाज़िर हो कर अर्ज की : "अफ्ज़ल आ'माल कौन से हैं?" हुस्ने अख़लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर ने इरशाद फ़रमाया : "अल्लाह पर ईमान लाना, उस की तस्दीक़ करना, अल्लाह की राह में जिहाद करना (हुस्ने अख़लाक़, पेज 71)

ईमान की जांच होगी

अल्लाह का फ़रमान है (तर्जमा) : अगर तुम्हें कोई तकलीफ पहुँची तो वो लोग (यानी पहले के मुसलमान) भी वैसी ही तकलीफ पा चुके हैं और ये दिन है जिनमें हमने लोगों के लिये बारियाँ रखी है और इसलिये कि अल्लाह पहचान करा दे ईमान वालों की, और तुम में से कुछ लोगों को शहादत का मरतबा दे और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को।(सूरह इमरान, आयत न. 140)

दीनदारी क्यों नही अपनाते हो

आज ले उनकी पनाह, आज मदद मांग उनसे
फिर ना मानेंगे, कयामत में अगर मान गया!

दीनदारी की बरकतें

हदीस : हज़रत उमर रदीयल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया आख़िरी ज़माने में मेरी उम्मत को अपने हुक्मरानों (ज़ालिम मंत्रियों)से सख़्त तकलीफें पहुँचेंगी उन से निजात नहीं पायेगा मगर वो शख़्स जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस पर अपनी ज़बान, हाथ और दिल के साथ जिहाद किया यह वह शख़्स है जो पूरी तरह सबक़त ले गया दूसरा वह आदमी जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस की तसदीक की, तीसरा वह आदमी जिस ने अल्लाह के दीन को पहचाना और उस पर ख़ामोश रहा। अगर किसी को नेकी करते देखा तो उस से मोहब्बत करने लगा और अगर किसी को ग़लत काम करते देखा तो उस से नाखूश रहा। यह सब अपनी अन्दरूनी हालत के बाइस निजात पा जायेंगे। (बैहकी)

तौबा की चाहत

किताब मिन्हाजुल आबिदीन के बाब 2 में हुज़ूर इमाम ग़ज़ाली अलैहिर्रहमा ने तौबा के अहमियत का तफसीलि तहरीर किए है फ़रमाते है (तर्जुमा) : ऐ इबादत के तालिब ! तुझ पर इबादत में मशगूल होने से पहले अपने गुनाहों से तौबा करना जरूरी है और येह दो वजह से जरूरी है :

एक तो इस लिये ताकि तौबा के बाइस तुम्हें ताअत (फरमाबरदारी) व इबादत की

तौफीक नसीब हो क्यूंकि गुनाहों की नुहूसत बन्दे को ताआत व इबादात बजा लाने से महरूम कर देती है और इस पर ज़िल्लत व रुस्वाई मुसल्लत कर देती है, यकीन जानो ! कि गुनाह एक ऐसी जंजीर है जो बन्दे को ताआत व नेकी की तरफ चलने से रोक देती है और गुनाहों के होते हुए नेक काम में जल्दी और दुरुस्तगी नहीं हो सकती क्यूंकि गुनाहों का बोझ नेकियों के सुकून को पैदा नहीं होने देता और न ही ताआत में निशात व खुशी पैदा होने देता है और गुनाहों पर इसरार और अड़ा रहना दिल को सियाह कर देता है।

इस तरह इन्सान क़सावते कल्बी (दिल की सख़्ती) और गुनाहों की अँधेरीओं में मुब्तला हो जाता है, न उस में खुलूस पैदा हो सकता है और न ही दिल का सफाई और न ही इबादत में लज्जत व हलावत (मिठास) पैदा हो सकती है, जो शख्स गुनाहों से ताइब (तौबा करने वाला) नहीं होगा, अगर खुदा का फ़ज़्ल उस के शामिले हाल न हुवा तो धीरे धीरे येह गुनाह उसे गुमराही के बाद कुफ्र तक पहुंचा देंगे। ऐसे शख्स पर बद नसीबी और बद बख़्ती ग़ालिब आ जाएगी, तो ऐसे शख्स पर तअज्जुब है कि इस नुहूसत व क़सावत (सख्त दिली) के होते हुवे इसे ताआते इलाही की तौफीक किस तरह मिल सकती है? और गुनाहों पर अड़ने वाला शख्स ताआते खुदावन्दी का दा'वा कैसे कर सकता है और शरीयत के खिलाफ काम को अपनाते हुवे वोह इबादते खुदावन्दी कैसे बजा ला सकता है? इसी तरह जो शख्स गुनाहों की गन्दगी और पलीदी से आलूदा हो वोह अल्लाह तआला की मुनाजात (तन्हाई में दुआ) का कुर्ब कैसे हासिल कर सकता है?

तौबा के ज़रूरी होने की दूसरी वजह येह है कि बग़ैर तौबा के इबादात क़बूल नहीं होती, जिस तरह कर्ज़ ख़्वाह का कर्ज़ अदा करने से पहले उस के सामने हदिये और तोहफे कोई अहम्मिय्यत नहीं रखते और न वोह इन्हें क़बूल करता है, इसी तरह पहले गुनाहों से तौबा लाज़िम है इस के बा'द आम इबादाते नाफिला, इसी तरह जब फ़राइज़ किसी के ज़िम्मे लाज़िम हों तो उस के नवाफ़िल वगैरा कैसे क़बूल हो सकते हैं? यूं ही अगर कोई शख्स हराम व ममनूअ काम तो तर्क न करे मगर मुबाह व हलाल चीजों में परहेज़ व एहतियात करे तो उस का ऐसा परहेज़ क्या वक्अत रख सकता है ? और वोह शख़्स खुदा तआला से मुनाजात, उस की दरगाह में पसन्दीदा और उस की सना (तारीफ़) करने के लाइक कैसे हो सकता है जिस पर खुदा तआला नाराज़ हो, गुनाहों पर इस्रार करने वालों का अकसर येही हाल है। (मिन्हाजुल आबिदीन, बाब 2)

आईनाए इब्रत

ऐ लोगो ! नफ्स को गुनाहों पर टोकते रहो, इस का मुहासबा (हिसाब) करते रहो और तौबा करने में सुस्ती और ताखीर (देर) न करो क्यूंकि मौत का वक्त पोशीदा है और दुन्या धोके व फरेब में डाल रही है और नफ्स और शैतान दो खतरनाक दुश्मन तुम्हें गुमराह करने की ताक में हैं इस लिये हर वक्त दरबारे ईज़दी में तज़र्रुअ व ज़ारी करते रहो

(गुनाहों को याद करके रोते रहो) और अपने वालिदे माजिद हज़रते आदम अलैहिस्सलाम का हाल अकसर अवकात जेहन में दोहराते रहो जिन को रब तआला ने खुद अपने दस्ते कुदरत से पैदा फ़रमाया और उन में अपनी रूह फूंकी और फिर फ़िरिश्ते उन्हें उठा कर जन्नत में ले गए, आप से सिर्फ एक लग्ज़िश सरज़द हुई तो अपने मक़ामे आली से गिर गए यहां तक कि एक रिवायत में आया है कि लग्ज़िश होने के बा'द अल्लाह तआला ने आप से पूछा :

(तर्जुमा) ऐ आदम ! मेरा जवारे रहमत तेरे लिये कैसा था? आप ने अर्ज किया: बहुत अच्छा, तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया : मेरे जवारे रहमत से दूर चला जा और मेरी अता कर्दा इज़्ज़त का ताज सर से उतार दे क्यूंकि मेरी नाफ़रमानी करने वाला मेरे जवारे रहमत (अल्लाह का कुर्ब) में रहने के लायक नहीं।

एक रिवायत में आया है कि आदम दो सो बरस इस लग्ज़िश पर रोते रहे, तब जा कर अल्लाह तआला ने आप की तौबा क़बूल फ़रमाई और इस लगज़िश को मुआफ फ़रमाया। येह उस कामिल बुजुर्ग का हाल है जो उस का नबी और दोस्त था तो आम लोगों का क्या हाल होगा जो बे शुमार गुनाहों का इर्तिकाब कर चुके हैं। दो सो बरस वोह इख़्लास का पैकर रोया जो वाकेई ताइब और खुदा की तरफ रुजू करने वाला था, तो गुनाहों पर इस्रार करने वाले गाफिल को किस कदर ज़ियादा गिर्या व जारी की ज़रूरत होगी? एक शाइर ने इसी चीज़ को कितने अच्छे अन्दाज़ में अदा किया है,

और तौबा करने के बा'द अगर तौबा तोड़ डालो और फिर गुनाह शुरू कर दो तो जल्द तौबा की तरफ लौटो और नफ़्स को तौबा पर रागिब करने के लिये येह कहो: "ऐ नफ़्स ! अब दोबारा खुलूस से तौबा कर ले शायद येह तेरी आखिरी तौबा हो और इस के बा'द इर्तिकाबे गुनाह के बिगैर ही तू मर जाए।" इसी तरह गुनाह के बा'द तौबा करते रहो और जिस तरह तुम ने गुनाह करना दस्तूर बना लिया है गुनाह के बा'द तौबा को भी पेशा बना लो और गुनाह कर के तौबा से आजिज़ न हो जाओ और कभी तौबा से मुंह न मोड़ो और शैतानी धोके में आ कर तौबा से हरगिज़ न रुको क्यूंकि तौबा करना नेक होने की अलामत है। क्या तुम ने नबिय्ये करीम का येह इरशाद नहीं सुना ? आप फरमाते हैं : (तर्जमा) तुम में से बेहतर वोह शख़्स है जिस से अगर गुनाह सादिर हों तो बा'द में फौरन तौबा करे। (मिन्हाजुल आबिदीन, बाब 2)

तौबा का माना : हुजूर नज़्मुद्दीन कुबरा रहमतुल्लाह अलैह अपनी किताब अल उसूल अश्शरा में लिखते है (तर्जुमा) : असल व अव्वल तौबा है और तौबा अल्लाह त'आला की तरफ दिल से रूज का नाम है। सलीको की तौबा से मुराद तमाम जाहिरी और बातिनी गुनाहों को छोड़ देना है और गुनाह वो चीज है जो तुझे अल्लाह त'आला की तरफ जाने से रोकती है। ख़्वा वो दुनियावी मरातिब हो या उखरावी मरातिब। तालिबे हक़

पर लाज़िम है के खुदा के इलावा हर मक़सूद से किनाराकश हो जाए। यहां तक के अपने वुजूद को भी छोड़ दे। क्योंकि सूफिया का क़ौल है यानि हमारा वुजूद ऐसा गुनाह है के इस से बड़ा कोई गुनाह नहीं। तौबा के माना गुनाह से दूरी इख्तियार करना है।

अल्लाह तौबा से राज़ी होता है : फरमाने नबवी ﷺ है कि रहमते खुदावन्दी को उस इन्सान की तौबा से ज़्यादा खुशी होती है (मिसाल) जो बीरान जंगल में अपनी सवारी पर खाने पीने के सामान लादे सफर कर रहा हो और वहां आराम की ग़रज़ से रुक जाए, वह सर रखे तो उसे नीद आ जाये.. जब सो कर उठे तो उस की सवारी सामान के साथ गाइब हो और वह उस की तलाश में निकले यहां तक कि सख़्त गर्मी और प्यास से बद-हाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और थक हार के मौत के इन्तेज़ार में अपने बाज़ू का तकिया बना कर लेट जाये, अब जो वह जागा तो उसने देखा उस की सवारी सामान के साथ उस के करीब मौजूद है। इसें देखकर वह बहुत खुश हुआ। अल्लाह त'आला को बन्दे की तौबा से उस सवारी वाले शख्स से भी ज्यादा खुशी होती है जिस का सामान जागने के बाद उस को मिल गया हो। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 34, पेज 229)

गुनाहों से बचने की चाहत

गुनाहों से खौफजदा होने की फजीलत

येह बात अच्छी तरह जेहन नशीन कर लीजिये कि गुनाहों से मुतनब्बेह करने वाली बातों में खौ़फे़ इलाही, उस के इन्तिकाम का अन्देशा, उस की हैबत और शानो शौकत, उस के अज़ाब का डर और उस की गिरिफ्त बहुत नुमायां हैसिय्यत रखती हैं,

फ़रमाने इलाही है कि (तर्जमए कन्जुल ईमान) : "तो डरें वोह जो रसूल के हुक्म के खिलाफ करते हैं कि उन्हें कोई फितना पहुंचे या उन पर दर्दनाक अज़ाब पड़े।" (सूरह नूर, आयत 63)

मरवी है कि हुजूर ﷺ एक जवान के पास तशरीफ़ लाए जो नज़्ज़ के आलम में था, आप ने फ़रमाया अपने आप को किस आलम में पाते हो ? अर्ज किया : या रसूलल्लाह ! मैं अल्लाह की रहमत का उम्मीद वार हूं और अपने गुनाहों से खौफ़ज़दा हूं। हुजूर ने यह सुन कर फ़रमाया कि किसी बन्दे के दिल में ऐसी दो बातें जम्अ नहीं होती मगर अल्लाह तआला उस बन्दे की उम्मीद पूरी कर देता है और गुनाहों के खौ़फ़ से उसे बे नियाज़ कर देता है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

वह्व बिन वर्द से मरवी है : हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि जन्नत की महब्बत और जहन्नम का खौ़फ़ मुसीबत के वक़्त सब्र देता है और येह दो चीजें दुन्यावी लज़्ज़तों, ख्वाहिशात और ना फ़रमानियों से दूर कर देती हैं।

हज़रते हसन का कौल है व खुदा तुम से पहले ऐसे लोग हो गुड़े हैं जो गुनाहों को

इतना अज़ीम समझते थे कि वोह बे हद व हिसाब सोने चांदी की बख्शिशों को भी अपने एक गुनाह से नजात का ज़रीआ नहीं समझते थे।

कम हंसने और ज़ियादा रोने की चाहत

फ़रमाने नबवी है कि जो कुछ मैं सुनता हूं, क्या तुम सुनते हो? आस्मान चर चराता है और उस का हक है कि वोह चर चराए, रब्बे जुल जलाल की कसम। आस्मान में चार उंगल जगह नहीं है जिस में फ़िरिश्ते बारगाहे इलाही में सजदा रेज़, क़ियाम करने वाला या रुकूअ करने वाला न हो, जो कुछ मैं जानता हूं अगर तुम जानते तो कम हंसते और ज़ियादा रोते और निकल जाते या पहाड़ों पर चढ़ जाते और अल्लाह तआला के शदीद इन्तिकाम और हैबतो जलाल के खौ़फ़ से अल्लाह तआला की पनाह ढूंडते।

एक रिवायत में हज़रते बक्र बिन अब्दुल्लाह अल मुज़नी का कौल है: जो लोग हंसते हुवे गुनाह करते हैं वोह रोते हुवे जहन्नम में जाएंगे।

हदीस शरीफ में है: कि अगर मोमिन अल्लाह तआला के तय्यार कर्दा तमाम अज़ाबों को जानता तो कभी भी जहन्नम से बे खौफ़ न होता। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

सहीहैन में है, जब येह आयत नाज़िल हुई:

وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ

तर्जमा : और ऐ मेहबूब, अपने क़रीबतर रिश्तेदारों को डराओ

तो आप ﷺ खड़े हो गए और फ़रमाया ऐ गिरौहे कुरैश अल्लाह तआला से अपने नफ़्सों को खरीद लो, मैं तुम्हें अल्लाह तआला के मुआमलात में किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ बनी अब्दे मनाफ। (हुजूर ﷺ के रिश्तेदार) मैं तुम्हें अहकामे खुदावन्दी में किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ अब्बास। (रसूले खुदा ﷺ के चचा) मैं आप को अल्लाह तआला के अज़ाब से किसी चीज़ से बे परवा नहीं करूंगा, ऐ बनी अब्दे मुनाफ़ (हुजूर ﷺ के रिश्तेदार) मैं तुम्हें अहकामे खुदावन्दी में किसी चीज़ से वे परवा नहीं करूंगा, ऐ अब्बास। (रसूले खुदा ﷺ के चचा) मैं आप को अल्लाह तआला के अज़ाब से किसी चीज़ से वे परवा नहीं करूंगा, ऐ सफ़िय्या (रसूले खुदा की फूफी) मैं तुम को अल्लाह के सामने किसी चीज़ से वे परवा नहीं करूंगा, ऐ फातिमा! (हुजूर ﷺ की बेटी) मेरे माल से जो चाहे मांग लो मगर मैं अल्लाह के सामने तुम्हें किसी चीज़ से वे परवा नहीं करूंगा।

हज़रते आइशा सिद्दीका ने येह आयत पढ़ी:

وَالَّذِينَ يُؤْتُونَ مَا آتَوْا وَقُلُوبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلَىٰ رَبِّهِمْ رَاجِعُونَ

तर्जमा : **और वो जो देते हैं जो कुछ दें और उनके दिल डर रहे हैं यूं कि उनको अपने रब की तरफ़ फिरना है।** (सुरह मोमिनून, आयत नं 60)

और पूछा : या रसूलल्लाह! क्या येह वोह शख़्स है जो ज़िना करता है, चोरी करता है, शराब पीता है मगर खौफ़े खुदा भी रखता है? आप ने फ़रमाया ऐ अबू बक्र की बेटी। ऐसा नहीं है बल्कि इस से मुराद वोह शख़्स है जो नमाज़ पढ़ता है, रोजा रखता है, सदका देता है मगर इस बात से डरता है कि कहीं वोह ना मक्बूल न हों। इसे अहमद ने रिवायत किया है। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

बे खौफी और ख़ौफ़ वाली मज़लिस

हज़रते हसन बसरी से कहा गया ऐ अबू सईद ! तुम्हारी क्या राए है? हम ऐसे लोगों की मजलिस में बैठते हैं जो हमें रहमते खुदावन्दी से उम्मीदें वाबस्ता रखने की ऐसी बातें सुनाते हैं कि हमारे दिल खुशी से उड़ने लगते हैं, आप ने फ़रमाया बा खुदा! तुम अगर ऐसी कौम में बैठते जो तुम्हें खौफे खुदा की बातें सुनाते और तुम को अज़ाबे इलाही से डराते यहां तक कि तुम अम्न पा लो, वोह तुम्हारे लिये बेहतर है उस चीज़ से कि तुम ऐसे लोगों में बैठो जो तुम को बे खौफी और उम्मीद में रखें यहां तक कि तुम को खौफ आ घेरे।

फारूके आ 'जम और ख़ौफ़े खुदा

हज़रते फारूके आ'ज़म उमर बिन खत्ताब को जब नेजे से जख्मी कर दिया गया और उन की वफात का वक्त करीब आया तो उन्हों ने अपने बेटे से कहा : बेटे । मेरा चेहरा ज़मीन पर रख दो, अफ्सोस और शदीद अफ्सोस। अगर अल्लाह ने मुझ पर रहम न फ़रमाया। हज़रते इब्ने अब्बास ने कहा अमीरुल मोमिनीन। आप को किस चीज़ का ख़ौफ़ है? अल्लाह तआला ने आप के हाथ से फुतूहात कराई, शहर आबाद कराए। उन्हों ने कहा : मैं इस बात को पसन्द करता हूं कि मुझे बराबर ही में छोड़ दिया जाए या'नी न नुक्सान और न नफ़्ज़ दिया जाए। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

हज़ते जैनुल आबिदीन अली बिन हुसैन जब वुजू से फारिग होते तो कांपने लग जाते, लोगों ने सबब पूछा तो आप ने फ़रमाया तुम पर अफ्सोस है। तुम्हें पता नहीं मैं किस की बारगाह में जा रहा हूं और किस से मुनाजात का इरादा कर रहा हूं।

हज़रते अहमद बिन हम्बल ने फ़रमाया खौफे खुदा ने मुझे खाने पीने से रोक दिया, अब मुझे खाने पीने की ख़्वाहिशात नहीं होती। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

अल्लाह तआला के अर्श के साए में

सहीहैन की रिवायत है : हुजूर ﷺ ने उन सात आदमियों का जिक्र किया कि जिस दिन कोई साया नहीं होगा तो अल्लाह तआला उन्हें अपने अर्श के साए में जगह देगा, उन में से एक वोह आदमी है जिस ने तन्हाई में अल्लाह तआला के अज़ाब और वईद को याद किया और अपने कुसूर याद कर के खौफे इलाही से उस की आंखों से आंसू बह निकले और ख़ौफ़े इलाही की वजह से वोह नाफरमानी और गुनाहों से किनारा कश हो गया। (1)

अज़ाबे जहन्नम से महफूज दो आंखें

हज़रते इब्ने अब्बास (से मरवी है हुजूर ﷺ ने फ़रमाया : दो आंखें ऐसी हैं जिन्हें आग नहीं छूएगी, एक वोह आंख जो आधी रात में अल्लाह के खौफ़ से रोई और दूसरी वोह आंख जिस ने राहे खुदा में निगहबानी करते हुवे रात गुज़ारी।

हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه से मरवी है: हुजूर ﷺ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन हर आंख रोएगी मगर जो आंख अल्लाह की हराम कर्दा चीज़ों से रुक गई, जो आंख राहे खुदा में बेदार रही और जिस आंख से खौफ़े इलाही की वजह से मख्खी के सर के बराबर आंसू निकला वोह रोने से महफूज़ रहेगी। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

खौफे इलाही से रोने की चाहत

तिर्मिज़ी ने हसन और सहीह कह कर हज़रते अबू हुरैरा رضي الله عنه से रिवायत की है कि रसूले खुदा ﷺ ने फ़रमाया: वोह शख्स जहन्नम में हरगिज़ दाखि़ल नहीं होगा जो अल्लाह के खौफ से रोया यहां तक कि दूध दोबारा थन में लौट आए और राहे खुदा का गुबार और जहन्नम का धुवां यक्जा नहीं होंगे। (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस का कौल है कि हज़ार दीनार राहे खुदा में खर्च करने से मुझे खौफे खुदा से एक आंसू बहा लेना ज़ियादा पसन्द है।

हज़रते औन बिन अब्दुल्लाह कहते हैं मुझे येह रिवायत मिली है कि इन्सान के खौफे खुदा से बहने वाले आंसू उस के जिस्म के जिस हिस्से पर लगते हैं, उस हिस्से को अल्लाह तआला जहन्नम पर हराम कर देता है और हुजूर ﷺ का सीनए अन्वर रोने की वजह से ऐसे जोश मारता था जैसे हांडी उबलती और जोश मारती है (या'नी जैसे भड़कती आग पर हांडी जोश मारती है) (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

हज़रते जा' फर की नसीहतें

हज़रते सुफ़यान सौरी कहते हैं कि हज़ते जा' फरे सादिक رضي الله عنه की खिदमत में, मैं हाज़िर हुवा और अर्ज की ऐ रसूले खुदा के लख्ते जिगर । मुझे वसिय्यत कीजिये ! आप ने फ़रमाया: "सुफ्यान झूटे में मुरुव्वत नहीं होती, हासिद में खुशी नहीं होती, गमगीन में भाईचारा नहीं होता और बद खुल्क के लिये सरदारी नहीं होती।"

मैं ने कहा: ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द। कुछ और नसीहत फरमाइये। आप ने फ़रमाया: ऐ सुफ्यान ! अल्लाह तआला की मनाकर्दा चीज़ों से रुक जा तू आबिद होगा, अल्लाह की तक्सीम पर राजी हो तू मुसलमान होगा, जैसी तुम लोगों से दोस्ती चाहते हो तुम भी उन के साथ वैसी दोस्ती रखो, तब तुम मोमिन होगे, बुरों से दोस्ती न रख वरना तू भी बुरे अमल करने लगेगा, चुनान्चे हदीस में है कि आदमी अपने दोस्त के तरीके पर होता है, तुम येह देखो कि तुम्हारी दोस्ती किस से है? और अपने कामों में उन लोगों से मश्वरा

लो जो खौफे खुदा रखते हों।

मैं ने अर्ज किया : ऐ रसूले खुदा के फरज़न्द ! कुछ और नसीहत कीजिये। आप ने फ़रमाया जो बिगैर कबीले के इज़्ज़त और बिगैर हुकूमत के हैबत चाहे उसे चाहिये कि खुदा की नाफरमानी की ज़िल्लत से निकल कर अल्लाह की फरमां बरदारी में आ जाए।

मैं ने कहा ऐ रसूले खुदा के फ़रज़न्द । कुछ और नसीहत फरमाइये। आप ने फ़रमाया मुझे मेरे वालिद ने तीन बेहतरीन अदब की बातें सिखलाई और फ़रमाया : ऐ बेटे। जो बूरों की सोहबत इख्तियार करता है, सलामत नहीं रहता, जो बुरी जगह जाता है मुत्तहम होता है और जो अपनी जुबान की हिफाज़त नहीं करता शर्मिन्दगी उठाता है।

नाफ़रमान का अंजाम

इब्ने मुबारक से पूछा कि जो शख्स अल्लाह की ना फरमानी करता है, क्या वोह इबादत का मज़ा पाता है? उन्हों ने कहा : नहीं और नाफरमानी का इरादा करने वाला भी नहीं।

इमाम अबुल फरज इब्ने जौजी का कौल है कि ख़ौफ़ ख्वाहिशाते नफ्सानी को जलाने वाली आग है, जिस क़दर येह आग शहवात को जलाएगी और गुनाहों से रोकेगी, उस कदर येह बेहतरीन होगी इसी तरह जिस कदर येह खौफ़ इबादत पर बर अंगेख्ता करेगा उसी कुदर येह बेहतरीन होगा और ख़ौफ़ साहिबे इज़्ज़त कैसे नहीं होगा, इसी से ही तो पाक दामनी, तक्वा, परहेज़गारी, मुजाहदात और ऐसे उम्दा आ'माल का जुहूर होता है जिन से अल्लाह तआला का कुर्ब हासिल होता है जैसा कि आयात व अहादीस से साबित होता है (मुकाशफतुल कुलूब, बाब 52)

तर्के दुनिया की चाहत

अब दुनियादारी को तर्क करके मुसलमानों को दीनदार बनने की जरूरत है । ये बात समझ लेना चाहिए कि आज दुनियादारी के वजह से ईमान व अक़ीदे, इल्म व अमल नाक़िस (अधुरा व कमजोर) हो चुका है इसके वजह से मुआशरे में तमाम खराबियां, बुराइयाँ और गुमराहियाँ पैदा हुई है जिसके वजह से अल्लाह का अजा़ब, दुश्मने इस्लाम (कुफ्फार) के हौसले बढ़े,नफ्स और शैतान गालिब हुए, ज़ालिम बादशाह मुसल्लत किये गए, भगवा लव ट्रेप, मोबलीचिंग और यूनिफॉर्म सिविल कोड जैसे मामले पैदा हुए, आपसी महब्बत खत्म हुई, बालितो से जिहाद व मुखालफल के बजाय इत्तेहाद और मुहब्बत की चाहत है । तमाम हालात का ईलाज यही है कि ईमान, इल्म व अमल को ताज़ा और मज़बूत किया जाए।

दुनिया और औरत से बचने का हुक्म

हदीस :- हज़रत अबु सईद खुदरी से मरवी है कि रसूल ﷺ ने फ़रमाया : "दुनिया मीठी और हरी भरी है और यक़ीनन अल्लाह त'आला तुमको इसमें दूसरों के पीछे

मालिक करेगा। फिर आज़माएगा कि क्या अमल करते हो? लिहाज़ा दुनिया से दूर रहो ! और औरतों से बचो क्योंकि बनी इस्राईल (पिछली उम्मत) का पहला फ़ितना औरतों (बेपर्दगी) ही से हुआ।" (मुस्लिम शरीफ जिल्द 2, पेज 353)

तर्क़े दुनिया और हिदायत

कुरआन में है : (तर्जुमा) ''तो क्या वह जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिये खोल दिया तो वह अपने रब की तरफ़ से नूर पर है,'' (सूरह जुमर, आयत न. 22)

शाने नुज़ूल : रसूले करीम ﷺ ने जब यह आयत तिलावत फ़रमाई तो सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह, सीने का खुलना किस तरह होता है फ़रमाया कि जब नूर दिल में दाख़िल होता है तो व खुलता है और उसमें फैलावा होता है. सहाबा ने अर्ज़ किया इसकी निशानी क्या है. फ़रमाया, 'इस फ़ानी दुनिया से कनाराकशी, आख़िरत की तरफ़ रुजू, मौत आने से पहले मौत की तैयारी" (तफसीर ख़ज़ाइनूज इरफान)

तर्क़े दुनिया और नूरे बसीरत

हदीस : हज़रते हसन रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सहाबए किराम में तशरीफ़ लाये और फ़रमाया कौन है जो अल्लाह तआला से अंधेपन का नहीं बल्कि बसारत (रौशनी) का सवाल करता है? बा-ख़बर हो जाओ, जो दुनिया की तरफ माइल हो गया और उस से बे-इन्तेहा उम्मीदें रखने लगा उसका दिल अन्धा हो गया और जिसने दुनिया से अलाहिदगी करली और उस से कोई ख़ास उम्मीदें न रखीं, अल्लाह तआला उसे नूरे बसीरत अता फरमा दिया, वह तालीम के बगैर इल्म और तलाश के बग़ैर हिदायतयाब (हिदायत हासिल कर लिया) हो गया। (मुकाशफ़ुतुल कुलूब, बाब न. 31, पेज 192)

दुनिया से दूरी का इनआम

एक रोज़ ग़रीब नवाज़ हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी रहमतुल्लाहि अलैह की ख़िदमत में हाज़िर था कि एक शख़्स ने आकर अर्ज़ किया शैख़ साहब मैंने मुख़्तलिफ़ उलूम हासिल किए, बहुत जुहद किया लेकिन मक़सद नहीं पाया। ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया तुम्हे सिर्फ़ एक बात पर अमल करना चाहिए आलिम भी हो जाओगे और ज़ाहिद भी। वोह येह कि जनाबे रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया "दुनिया का तर्क करना तमाम इबादतों का सिर है और दुनिया की महब्बत तमाम ख़ताओं की जड़ है"।

अगर तुम इस हदीस पर अमल (यानी दुनिया को तर्क) करो तो फिर तुम्हें किसी और इल्म की ज़रूरत न रहे। गो इल्म एक ही लफ्ज़ है लेकिन इसका कह लेना आसान है मगर इस पर अमल करना मुश्किल है। (असरारे हक़ीक़ी, मक्तुब 5)

फ़ानी दुनिया की मिसाल

कुरआन में है : लोगों के लिये आरास्ता की गई उन ख़्वाहिशों की महब्बत औरतें और बेटे और तले उपर सोने चांदी के ढेर और निशान किये हुए घोड़े और चौपाए और खेती, यह जीती दुनिया की पूंजी है और अल्लाह है जिसके पास अच्छा ठिकाना (जन्नत है) (सुरह इमरान, आयत न. 14)

खास तौर पर 5 चीज़ो का नाम दुनियादारी है

1. दौलत की लालच - ये तमाम गुनाहो की बुनियाद है। यानी दौलत के वजह से नफ्सानी और शैतानी खसलतों को अपनाया जाता है।

2.नफ्सनी ख़्वाहिशात - इसके वजह से स्वार्थ, मनमजएँ, बेहयाई, रियाकारी तकब्बुर, खुद को बेहतर समझना, नामो नमूद जैसे ख़्याल दिल मे आते है।

3.शैतानी खसलतें- यानी हसद, कत्ल, जलन, झुट, धोखा, जुल्म, ख्यानत,

4. कुफ्फ़ार के मुसाबिहत - यानी कुफ्फ़ार व मुर्शिकीन (जैसे ईसाई, यहूदी, हिन्दू वगैरह गैर कौ़म) के तौर तरीके को अपना कर शरीअत व सुन्नत को छोड़ना।

5. जिहालत - दीनी तालिम से दूर रहना, सुस्ती, मस्ती, खेल तमाशा, आराईस, हंसी - मज़ाक़, टाईम पास वगैरह इन पाँचों के वजह से इन्सान गुनाह में मुलविश रहता है।

वल्लाहु आ'लम

सलल्लाहु त'आला अ़ला ख़ैरी ख़ाल्किही मुहम्मदिउं व आला आलिहि व असहाबिही व अहले बैतिही व अजवाजिही व ज़ुर्रियातिही अजमईन, बी रहमतिका या अरहमर रहीमीन

अहले ग़फ़लत कहते हैं कि सब बन्दे खुदा के हैं
लेकिन खुदा का बन्दा होता है, गुलामे मुस्तफ़ा हो कर
मुहम्मद की गुलामी दो जहाँ की बादशाही है
जो यह हासिल नहीं तो दो जहाँ की रुसवाई है

About Trust

अल्हमदुल्लिाह,

गौ़सो ख़्वाजा व रजा़ एक इस्लामी ट्रस्ट है जिसकी बुनियाद सितम्बर 2023 में रखी गई।

यह ट्रस्ट अल्लाह के फ़ज़्लो करम से और अल्लाह वालो के फै़जान से दीन व शरीयत के तहफ्फुज, कौम की ख़िदमत, ख़िदमते ख़ल्क़, हुकुकुल्लाह और हुकुकुलइबाद यानी तमाम नेक आमाल की तबलीग वगैरह फराइज मस्लके अहले सुन्नत व जमाअत लंदप मस्लके आला हजरत के मुताबिक अंजाम देती है।

ट्रस्ट के मकासिद में मुख़्तलिफ तरीकों से दीन की खिदमत करना शामिल है। इंशा अल्लाह ट्रस्ट का तरीका कार शरीयत और सुन्नत के दायरे में होगा। यह ट्रस्ट अल्लाह की रजा के लिए काइम की गई है लिहाजा इसके तमाम मामलात का ताल्लुक आखिरत से है।

इसके जरिए वही काम किया और लिया जाएगा जिसका बदला आखिरत में इनआम के तौर पर मिलना है। दुनियावी दौलत, शोहरत और नामो नुमूद से इसका कोई ताल्लुक नहीं।

टीम मेम्बर बनने के
लिए राब्ता करे या मुलाकात करे।

ख़ादिम
सूफ़ी अनवर रज़ा ख़ान क़ादरी
बानी ग़ौसो ख़्वाजा व रज़ा ट्रस्ट
व ख़ादिम ख़ानक़ाहे चिश्ती क़ादरी
बाढ़ु, रांची, झारखण्ड (इंडिया)
हि. 25 रजब 1446 / ई 26 जनवरी 2025

मुहम्मद की गुलामी दो जहाँ की बादशाही है
जो यह हासिल नहीं तो दो जहाँ की रुसवाई है

6 अमल की चाहत

हदीस : नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : कि तुम लोग मेरे लिए अपनी ज़ात से छः चीज़ों के ज़ामिन (गारेन्टर) बन जाओ। तो मैं तुम लोगों के लिए जन्नत का ज़ामिन (गारेन्टर) बन जाऊँगा।

1. जब बात करो तो सच बोलो।
2. जब वादा करो तो वादा पूरा करो।
3. जब तुम किसी चीज़ के अमीन बनाये जाओ तो अमानत अदा करो।
4. अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करो।
5. अपनी निगाहों को नीची रखो।
6. अपने हाथों को (बुराई से) रोके रखो।

(मिश्कात, जिल्द 2. सफा 415)